तिरुमल तिरुपति देवस्थान
सप्तगिरि
सचित्र मासिक पत्रिका
जून - 2019, रु. 5/-
१४-०६-२०१९
वज्र कवच समर्पण
१५-०६-२०१९
मौक्तिक कवच समर्पण
१६-०६-२०१९
सुवर्ण कवच समर्पण
तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामी का
ज्येष्ठाभिषेक
१४-०६-२०१९
से
१६-०६-२०१९
तक

श्री वराहस्वामी का मंदिर
तिरुमल

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

२०१९, अप्रैल २४ से २७ तक ति.ति.दे. के द्वारा श्री वराहस्वामी के आलय में आयोजित बालालय, अष्टबंधन, महासंप्रोक्षण के दिव्य दृश्य

ति.ति.दे. के अर्चकों के साथ उपस्थित देवस्थान के उच्चाधिकारी

अष्टबंधन लेपन तथा मसाला को मिलाकर कूटने का दृश्य

वैदिक कार्यक्रम को करने के लिए ऋत्विकों को आलय प्रवेश करना

श्री वराहस्वामी का तिरुमाडा वीथियों में शोभायात्रा

श्री वराहस्वामी के गर्भगृह के शिखर का महासंप्रोक्षण कार्यक्रम

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता ८-१३)

सब इन्द्रियों के द्वारों को रोककर तथा मन को हृदेश में स्थिर करके, फिर उस जीते हुए मन के द्वारा प्राण को मस्तक में स्थापित करके, परमात्मसम्बन्धी योगधारणा में स्थित होकर जो पुरुष 'ॐ' इस एक अक्षर रूप ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह पुरुष परमगति को प्राप्त होता है।

रत्नपूर्णां महीं सर्वां प्रतिगृह्य विधानतः।
गीता पाठेन चैकेन शुद्ध स्फटिक वत्सदा॥

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

रत्नों से भरी सारी भूमि को दान के रूप में स्वीकार करने से बढकर एकबार गीता के पठन से मनुष्य शुद्ध स्फटिक की भांति सदा निर्मल बनता है।

पुस्तक विक्रय केंद्र

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	दाम
१.	आलवन्दार स्तोत्रम्	कमल किशोर हि. तापडिया	रु.१००/-
२.	आल्वार जीयरों का दिव्य जीवन	डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्य	रु.१०/-
३.	अन्नमाचार्य और सूरदास	डॉ.मुट्नूरि संगमेशम	रु.३५/-
४.	अन्नमाचार्य गीता-माधुरि	डॉ.पुट्टपर्ति नागपद्मिनी	रु.३५/-
५.	बालभारति सिरिस	ति.ति.दे.	रु.६/-
६.	भज गोविंदम्	श्रीमती के.शान्ता	रु.१५/-
७.	भक्त नंदनार	डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्य	रु.२०/-
८.	भक्त कनकदास	डॉ.के.लीलावती	रु.२५/-
९.	गीता मकरंदम-भाग-१	श्री श्री श्री विद्याप्रकाशानन्दगिरि	रु.६५/-
१०.	गीता मकरंदम-भाग-२	श्री श्री श्री विद्याप्रकाशानन्दगिरि	रु.४५/-
११.	गीता मकरंदम-भाग-३	श्री श्री श्री विद्याप्रकाशानन्दगिरि	रु.२०/-
१२.	गीता मकरंदम-भाग-४	श्री श्री श्री विद्याप्रकाशानन्दगिरि	रु.२०/-
१३.	गीता मकरंदम-भाग-१ से भाग-४ तक (सेट)	श्री श्री श्री विद्याप्रकाशानन्दगिरि	रु.१५०/-
१४.	गोमाता जगन्माता	प्रो.यद्दनपूडि वेंकटरमणराव	रु.३०/-
१५.	नायनार	डॉ.एम.रंगय्या	रु.२५/-
१६.	श्री पुरन्दर दास के भक्ति गीत	डॉ.वी.आर.पंचमुखि	रु.२०/-
१७.	संत त्यागराज	डॉ.ई.पांडुरंगा राव	रु.६/-
१८.	श्री पद्मावती सन्निधि	प्रो.आई.एन.चन्द्रशेखर रेड्डी	रु.४५/-
१९.	श्री वेंकटेश अष्टोत्तर सहस्रनाम	-	रु.१०/-
२०.	श्री वेंकटेश्वर भगवान का अवतार	डॉ.यद्दनपूडि वेंकटरमणराव	रु.३०/-
२१.	श्री वेंकटेश्वरस्वामी के ब्रह्मोत्सव	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	रु.२०/-
२२.	श्री वेंकटेश्वरस्वामी के दर्शन	-	रु.३०/-
२३.	श्री वेंकटेश्वरस्वामी के कैंकर्य	आचार्य जी.पद्मजा देवी	रु.२५/-
२४.	श्री वेंकटेश्वरस्वामी के उत्सव	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	रु.३५/-
२५.	श्रीमद् भगवद्गीता	वेमूरि राधा कृष्णमूर्ति	रु.२०/-
२६.	स्त्रियों के रामायण लोक गीत	डॉ.के.लीलावती	रु.७०/-
२७.	तिरुपति के परिसर क्षेत्र	डॉ.आर.राज्यलक्ष्मी	रु.१५/-
२८.	तिरुपति यात्रा	डॉ.एस.टी.अरुणकुमारी	रु.२०/-
२९.	तिरुप्पावै	यु.कमला कुमारी	रु.१५०/-
३०.	तिरुचानूर क्षेत्र	डॉ.के.एस.इंदिरा	रु.२५/-
३१.	वल्लल्लार ज्योतिरामलिंगेश्वरस्वामी	डॉ.आर.सुमन लता	रु.२०/-

उपर्युक्त पुस्तकों की खरीदारी के लिए किसी राष्ट्रीय बैंक में ''कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.देवस्थान, तिरुपति'' के नाम पर माँगड्राफ्ट लेकर, ''सहकार्यनिर्वहणाधिकारी, पुस्तक विक्रय केन्द्र, ति.ति.देवस्थान, ति.ति.दे. प्रेस कांपौंड, के.टी.रोड, तिरुपति - ५१७ ५०७'' के पते को पूरे विवरण के साथ लेख भेजें।

अन्य विवरण के लिए फोन - ०८७७-२२६४२०९ से संपर्क कीजिए। डाक से मांगनेवालों को पोस्टल व्यय के लिए अतिरिक्त पैसे देना पडता है।

सप्तगिरि

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं
ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन,
वेङ्कटेश समो देवो
न भूतो न भविष्यति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
सचित्र मासिक पत्रिका

वर्ष-५० जून-२०१९ अंक-०१

विषयसूची

श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी	श्रीमती रूपाली गोविंद रांदड	07
राम नाम जपना है	श्री बाल कवि 'हंस'	10
श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर-अप्पलायगुंटा	डॉ.बी.ज्योत्स्ना देवी	11
जलज-वासिनी अलमेलुमंगा के जल-विहारोत्सव	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	14
तिरुमल श्रीवारि ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव	डॉ.बी.के.माधवी	18
श्री रामानुजाचार्यजी एवं प्रधान शिष्य श्री कूरेशाचार्यजी	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया	22
भगवद्गीता का व्यावहारिक ज्ञान	श्री अमोघ गौराँग दास	25
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	31
श्री रामानुज नूट्रंदादि	श्री श्रीराम मालपाणी	33
भागवत कथा सागर भक्त ध्रुव चारित्रिक विशिष्टता	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	34
दैव योगिनी वेंगमाम्बा	श्री के.रामनाथन	37
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	39
भारत के प्रसिद्ध १६ हनुमान मंदिर	श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया	41
भगवान 'सरलता' से प्राप्त होते हैं	डॉ.डी.उमादेवी	45
लौकिक जीवन में प्राणायाम की आवश्यकता	श्री डी.चैतन्यकृष्ण	48
ईश्वर का पता कहाँ?	श्री वेमुनूरि राजमौलि	50
राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	51
भारतीय सनातन संस्कृति	श्रीमती वी.केदारम्मा	52

गौरव संपादक
श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस्.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, बी.ए., बी.एड्.,
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

श्री पी.शिवप्रसाद,
सेवानिवृत्त चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त किये विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं। *– प्रधान संपादक*

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, 2264360.

मुखचित्र
श्रीवारि ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ
श्री देवी माँ जी के प्लवोत्सव, तिरुचानूर।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशियों को वार्षिक चंदा .. रु.850-00

संपादकीय

श्री बालाजी की अक्षर संपत्ति 'सप्तगिरि'

लोगों में भक्ति, सदाचरण, धर्माचरण, उत्तम् मार्ग पर चलना ऐसे सद्गुणों को बढ़ाकर, आगे ले जाने में धार्मिक पत्रिकाओं का एक प्रत्येक स्थान हमेशा से ही रहा है। विशेष रूप से तिरुमल तिरुपति देवस्थान के द्वारा प्रकाशित होनेवाले 'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पुराने जमाने में जब भी लोगों को किसी विषय पर धर्म संदेह हुआ, तो या किसी पुराण या महाकाव्य से संबंधित विषयों के बारे में जानना हो तो, महर्षियों के पास या आश्रम अथवा धर्मपीठों के पास जाकर अपने संदेह की निवृत्ति किया करते थे। इस यान्त्रिक युग में, भाग दौड से भरी जिन्दगी में, कहीं जाये बिना, हर प्रकार के धर्म संदेह तथा आध्यात्मिक विशेषताओं का विवरण देते हुए, सीधे जिज्ञासु पाठकों के आंगन में, साक्षात् सप्तगिरीश भगवान् वेंकटेश्वर स्वामीजी के दिव्य प्रसाद के रूप में मिलनेवाला धार्मिक मासिक पत्रिका है 'सप्तगिरि'।

भक्तजन तथा पाठकों को- तिरुमल भगवान का इतिहास, श्रीवारि के दर्शन का समय, सेवाएँ, उत्सव, आवास, यात्रा संबन्ध सुविधाएँ... इन सबके बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान करने की संकल्प से तेलुगु, तमिल, कन्नडा, हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत भाषाओं में अलग से प्रकाशित हो रहे धार्मिक मासिक पत्रिका 'सप्तगिरि' है। अपनी परिधि को और विस्तृत करके भक्तों को आध्यात्मिक सेवाएँ प्रदान कर रही है। तिरुमल श्रीवारि मन्दिर के साथ-साथ इस देवस्थान के सभी अनुबन्ध मन्दिरों के बारे में सूचना, वेदों तथा उपनिषदों के बारे में, अन्य क्षेत्रों तथा मन्दिरों के बारे में भारत-भागवत्, रामायण आदि महाकाव्यों के बारे में, भगवद्गीता से संबंधित कई विषय और भी बहुत सारे विशेषताएँ 'सप्तगिरि' अपने पाठकों का प्रदान कर रही है। इतना ही नही, कई व्रत और त्योहार इत्यादी के महत्व बताने के साथ-साथ, संगीत, चित्रलेखन, शिल्प जैसे ललित-कलावों के बारे में अच्छे से अवगत करा रही है हमारे (आपके) धार्मिक मासिक पत्रिका 'सप्तगिरि'।

इस प्रकार आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में दिशा निर्देश कर रहे 'सप्तगिरि' पत्रिका, इस अंक से ५०वीं वर्ष गांठ में प्रवेश कर रही है। यहाँ पर कुछ समय रुककर, सिंहावलोकन करने पर, हमें ऐसा लग रहा है कि- भक्तों की दुनिया में अब तक प्रदत्तित विषयों को अवलोकन करने पर और भी ज्यादा विषय हैं, यह सविनम्र विज्ञप्त कर रहे हैं। इस पत्रिका को प्रकाशित करने के विषय में, विभिन्न शीर्षकों, मुखपत्र चित्रों, इत्यादि कई पहलुवों से 'सप्तगिरि' का सर्वांग सुन्दर आकृति प्रदान करके, पाठकों तथा भक्तों को और अधिक सेवाएँ प्रदान करने के उदात्त लक्ष्य से तिरुमल तिरुपति देवस्थान के स्वामित्व अनन्य दृष्टि से निरंतर प्रयास कर रही है। हर महीने अपने आंगन में पहुँचनेवाले सप्तगिरि मासिक पत्रिका को भगवान वेंकटेश्वर के प्रतिबिम्ब के रूप में तथा प्रसाद के रूप में मानने वाले भक्तपाठकों के विश्वास को और भी मजबूत बनाने में कोई कसर नही छोडेंगे, यह बात हम सविनम्र सूचित कर रहे हैं। इसलिए पाठकदेवतावों से अनुरोध करते हैं कि 'सप्तगिरि' के विकास में आप सब अपने सहयोग एवं अमूल्य सुझाव तथा प्रतिक्रियाएँ समय-समय पर प्रदान करते रहें। उन्हें अत्यन्त आदर के साथ पालन करेंगे, यह बात हम सविनम्र सूचित कर रहे हैं।

अखिलांडकोटि ब्रह्माण्ड नायक भगवान वेंकटेश्वर के संपूर्ण अनुग्रह से 'सप्तगिरि' ५०वीं साल में कदम रखने के शुभ संदर्भ में, आप अपने साथ-साथ, अपने बन्धु-मित्रों के लिए भी 'चन्दा' भरकर, श्रीवारि के प्रसाद के रूप में उनको भी 'सप्तगिरि' प्रदान करें। अन्य भक्तों को भी जरूर 'योगदानकर्ता' बनाएँ।

श्री वेंकटेश्वर भक्ति अभियान के साथ-साथ सनातन हिन्दू धर्म का अभियान करना ही मुख्य उद्देश्य मानकर आगे बढ़ रही, हमारे (आपके) 'सप्तगिरि' पत्रिका के विकास में सभी पाठक गण जरूर हिस्सा लें, पहले से भी ज्यादा उत्साह से और अधिक प्रोत्साहन हमें प्रदान करें, इसी आकांक्षा हम प्रार्थना करते हैं कि सातों लोक में अतुलनीय सप्तगिरीश, हम सभी को इह-पर सौख्य बडे पैमाने में दें।

वेंकटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति!

श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी

(तिरुक्कोष्टियूर नम्बि)

- श्रीमती रूपाली गोविंद रांदड

जन्मनक्षत्र - वैशाख मास, रोहिणी नक्षत्र

अवतार स्थल - तिरुक्कोष्टियूर

आचार्य - श्री यामुनाचार्य स्वामीजी

शिष्य - श्रीरामानुजस्वामीजी

पेरियाल्वार ने अपने पेरियाल्वार तिरुमोळि में तिरुक्कोष्टियूर दिव्य देश की बड़ी प्रशंसा की है। तिरुक्कुरुगै पिरान, जिनका जन्म इस सुन्दर दिव्य देश में हुआ था, तिरुक्कोष्टियूर नम्बि नाम से प्रसिद्ध हुए और वे यामुनाचार्य स्वामीजी (आळवन्दार) के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। उन्हें गोष्ठीपूर्ण या गोष्ठीपुरिसर नाम से भी जाना जाता है।

श्री यामुनाचार्य स्वामीजी ने अपने पांच प्रमुख शिष्यों को विभिन्न सिद्धांतों के अध्यापन का निर्देश दिया था। इनमें से श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी को रहस्य त्रय - तिरुमंत्र, द्वय मंत्र और चरम श्लोक सिखाने का उत्तरदायित्व दिया गया था।

श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी ने श्री यतिराज को ''एम्पेरुमानार'' नाम से सम्मानित किया क्योंकि उन्होंने बिना किसी शर्त के चरम श्लोक का अर्थ उन सभी के साथ साझा किया, जो उसे जानने के लिए इच्छुक थे, जो यतिराज के निःस्वार्थ कृत्य को दर्शाता है। श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी यामुनाचार्य द्वारा सिखाये गए रहस्य त्रय के दिव्य अर्थों का अनुसन्धान करते हुए निरंतर भगवान के ध्यान में रहते थे और किसी से ज्यादा बातचीत नहीं करते थे। उनके गाँव में कोई उनकी कीर्ति नहीं जानता था।

श्रीरामानुजस्वामीजी श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी के यश को जानकर चरम श्लोक के अति गोपनीय अर्थ को सीखने के लिए श्रीरंगम् से तिरुक्कोष्टियूर १८ बार चल कर गए। अंततः १८वीं बार में श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी उन्हें चरम श्लोक के अति गोपनीय अर्थ का उपदेश देने का निर्णय लेते हैं। श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी श्री यतिराज से वचन लेते है की वे किसी भी अयोग्य व्यक्ति या ऐसे अधिकारी जिसने उस गूढ़ रहस्य के अर्थ को जानने के लिए बहुत कठिन प्रयास न किये हो, उसे इस ज्ञान का उपदेश नहीं देंगे। श्रीरामानुज स्वामीजी उस समय उसे स्वीकार करते हैं और वचन देते हैं। तब नम्बी उन्हें चरम श्लोक का अति गोपनीय ज्ञान सिखाते हैं। गीताचार्य का ''सर्व धर्मान परित्यज्य'' श्लोक (गीता-१८.६) ही चरम श्लोक है। इस श्लोक में ''एकम'' शब्द के माध्यम से बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत दर्शाया गया है - जिसका आशय है की केवल भगवान ही जीव के लिए उपाय है। इसके अतिरिक्त और कुछ भी, जैसे कर्म, ज्ञान, भक्ति योग, हमारी स्वयं की प्रपत्ति (समर्पण) आदि वास्तविक उपाय नहीं है। जब यह गोपनीय अर्थ किसी अयोग्य अधिकारी को बताया जाता है तब वह उसका आसानी से अपने कर्तव्यों को न निभाकर दुरुपयोग कर सकता है। इसलिए श्रीरामानुजस्वामीजी के समय तक आचार्यों ने बहुत सावधानी से उसकी रक्षा की। परन्तु श्रीरामानुजस्वामीजी ने इस गोपनीय अर्थ को सीखने के तुरंत बाद उन सभी को एकत्र

वार्षिक तिरुनक्षत्र (०३.०६.२०१९) के संदर्भ में...

किया जो उस रहस्य को जानने के लिए तत्पर थे और उन्हें विस्तार से चरम श्लोक का अर्थ समझाया। रामानुज के इस रहस्योद्घाटन के बारे में सुनकर नम्बि तुरंत उन्हें बुलवाते हैं। रामानुज जब नम्बि के निवास पर पहुँचते हैं तो नम्बि उनसे उनके इस कृत्य के बारे में पूछते हैं और रामानुज गुरु के आदेश की अवहेलना किये जाने को स्वीकार करते हैं। जब नम्बि उनसे पूछते हैं कि उन्होंने ऐसा क्यों किया तो रामानुजजी कहते हैं, ''मैं आपके आदेश की अवहेलना करके नरक में जाऊँगा पर दूसरे बहुत से लोगों को (जिन्होंने चरम श्लोक का अर्थ सुना) मोक्ष प्राप्त होगा और उनका उद्धार होगा।'' दूसरों को सच्ची आध्यात्मिक सहायता प्रदान करने वाले, रामानुजजी के विशाल हृदय को देखकर नम्बि अभिभूत हो जाते हैं और उन्हें ''एम्पेरुमानार'' (मन्नाथ) का विशेष नाम प्रदान करते हैं। एम्पेरुमान् का अर्थ है मेरे स्वामी (भगवान) और एम्पेरुमानार का अर्थ है जो भगवान से भी अधिक दयालु है। इस प्रकार तिरुक्कोष्टियूर में चरम श्लोक के गूढ़ अर्थ का रहस्योद्घाटन करके रामानुजजी एम्पेरुमानार हो गए। यह चरित्र (दृष्टांत), श्री वरवरमुनि स्वामीजी ने मुमुक्षुपडि व्याख्यान परिचय के चरम श्लोक प्रकरण (भाग/खंड) में बहुत स्पष्टता और सुंदरता से समझाया है।

नोट-६००० पड़ी गुरु परंपरा प्रभाव में यह बताया गया है कि श्रीरामानुजस्वामीजी ने तिरक्कोष्टियूर नम्बि से तिरुमंत्र का अर्थ सीखकर सबको बता दिया और उस वजह से नम्बि ने उन्हें एम्पेरुमानार नाम दिया और फिर बाद में उन्होंने चरम श्लोक का अर्थ सीखा। परन्तु वरवरमुनि स्वामीजी ने स्पष्ट रूप से समझाया है कि जो एम्पेरुमानार द्वारा उद्घोषित हुआ था वो चरम श्लोक था और इस व्याख्यान के और भी दृष्टांतों (घटनाओं) से यह उपयुक्त लगता है। क्योंकि चरम श्लोक के ''एकम'' शब्द को बहुत गोपनीय सिद्धांत घोषित किया गया है, हम उसे प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं (जैसे आचार्यों से सुना है)।

आचार्यों के अनेकों व्याख्यान में श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी के यश को दर्शाया गया है। उनमें से कुछ हम अब देखते हैं -

१. नाच्चियार तिरुमोळि १२.२ - पेरियवाच्चन् पिल्लै व्याख्यान

२. यहाँ श्री गोदादेवी (आण्डाल) को नम्बि के समान बताया गया है। जिस तरह से श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी अपने भगवद अनुभव किसी और से व्यक्त नहीं करते थे ठीक उसी तरह ऐसा कहा जाता है कि आण्डाल भी भगवान से वियोग की पीड़ा किसी से प्रकट नहीं करती थी।

३. तिरुक्कोष्टियूर के स्थानीय निवासी गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी की वास्तविक महानता को तब तक नहीं जान पाये जब तक रामानुजजी वहाँ नहीं पहुँचे थे। जब रामानुजजी तिरुक्कोष्टियूर पहुँचे उन्होंने तिरुक्कुरुगै पिरान (गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी का वास्तविक नाम जो शठकोप स्वामीजी के नाम पर था) के निवास के बारे में पूछा और उनके निवास की दिशा की ओर नीचे लेटकर दंडवत प्रणाम किया। जिनकी पूजा स्वयं रामानुजजी करते हैं, ऐसे गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी की कीर्ति को स्थानीय लोग तब समझ पाये।

४. दाशरथि स्वामीजी और कूरेश स्वामीजी दोनों ने सम्प्रदाय के बहुमूल्य अर्थों को समझने के लिए ६ महीने गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी के चरण कमलों कि सेवा की।

५. हर बार जब श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी श्रीरंगम् आते थे, उनके लौटने पर श्रीरामानुजस्वामीजी उन्हें बिदा करने के लिए तोडे ही दूर तक उनके साथ जाते थे। एक समय गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी के लौटने पर यतिराज उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे उन्हें ऐसी आज्ञा दे जिस पर वो आश्रय कर सके। गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी कहते हैं- जब श्रीरामानुजाचार्य स्वामीजी नदी में नहाते हुए डुबकी लगाते थे, तब उनके पीठ का ऊपर का भाग कूर्मासन के पीठ के समान दिखायी देता था (एक आसन जो कछुए के कवच की तरह दिखता है)। श्री यामुनाचार्य स्वामीजी के परमपद गमन के बाद भी मैं उनकी पीठ के उसी दृश्य का नित्य ध्यान करता हूँ। तुम भी उसी पर भरोसा करो। इस घटना से नम्बि दर्शाते हैं की शिष्य को आचार्य के प्राकृत शरीर (दिव्य स्वरूप) पर वैसा ही लगाव होना चाहिए जैसा की उनके निर्देशों और ज्ञान के प्रति है।

६. श्री यामुनाचार्य स्वामीजी कहते हैं कि वे ज्ञानापिरान को ही एकमात्र उपाय स्वीकार करते हैं। यह चरम श्लोक के ''एकम'' शब्द को समझाता है जो अन्य उपयोग को अलग करके यह स्थापित करता है कि भगवान ही एकमात्र उपाय है। यह हमारे संप्रदाय का बहुत ही गोपनीय सिद्धांत है जो श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी ने रामानुजजी को सिखाया था। एकबार उत्सव के लिए श्रीरंगम् पधारे हुए श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी, यतिराज को श्रीरंगम् मंदिर में एक एकांत स्थान पर बुलाते हैं और ''एकम'' शब्द के अर्थ समझाना शुरू करते हैं। लेकिन तभी वे खर्राटे लेते हुए गहरी नींद में सोये हुए मंदिर के एक अधिकारी को देखते हैं और यह कहते हुए कि यहाँ कोई है, तुरंत अर्थ की व्याख्या करना छोड़ देते हैं। परन्तु फिर बाद में वह श्री यतिराज को अर्थ का उपदेश देते हैं और उन्हें यह निर्देश भी देते हैं की वे उस अर्थ को केवल योग्य व्यक्ति को ही बताये। उसी समय तपते सूरज और चमकती दोपहर में दौड़ते हुए श्रीरामानुजस्वामीजी, कूरेश स्वामीजी के निवास स्थान पर जाते हैं और उन्हें यह गोपनीय अर्थ बता देते हैं। इस प्रकार कूरेश स्वामीजी द्वारा कोई विशेष प्रयास न होने पर भी उन्हें अर्थ समझाकर यतिराज ने ''सहकारी निरपेक्ष्यता'' का प्रमाण दिया है (हमारे उद्धार के लिए हमारी ओर से किसी भी कार्य की आशा ना करते हुए, स्वयं कृपा करना)।

७. तिरुविरुत्तम् ९५ - इस पाशुर के व्याख्यान में, यह बताया है कि श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी के एक शिष्य नंजियर बताते है कि यह पाशुर श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी का प्रिय पाशुर है। इस पाशुर में यह दर्शाया गया है कि जीवात्मा भले ही निरंतर लौकिक अनुष्ठानों में संलग्न रहती है पर भगवान फिर भी सदा ही उस पर कृपा करते हैं और उसका कल्याण करते हैं।

८. तिरुवायमोळि १.१०.६ - नंपिल्लै व्याख्यान - इस पाशुर में आल्वार अपने ही मन से चर्चा करते हैं। इसके अर्थ को समझाने के लिए नंपिल्लै कहते हैं कि भगवद विषय बहुत उच्छ विषय है और हर कोई इसे नहीं समझ सकता। जैसे श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी एकांत में इस विषय का चिंतन निरंतन किया करते थे, वैसे ही आल्वार भी भगवद विषय की चर्चा स्वयं अपने मन से करते हैं।

८. तिरुवायमोळि ८.८.२. - एक बार यतिराज के व्याख्यान में जीवात्मा के स्वरूप (प्रकृति) पर प्रश्न हुआ कि जीवात्मा ज्ञातृत्व (ज्ञानी/जानने वाली) है या शेषत्व (भगवान की सेवक) है? यतिराज श्री कूरेश स्वामीजी को निर्देश देते हैं कि वे इस अर्थ को सीखने के लिए श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी के पास जाये। कूरेश स्वामीजी तिरुक्कोष्टियूर जाते हैं और ६ महीने तक श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी की सेवा करते हैं। अंततः नम्बि श्री कूरेश से उनके आने का उद्देश्य पूछते हैं, तो कूरेश स्वामीजी उन्हें प्रश्न के बारे में बताते हैं। नम्बि कहते हैं आल्वार ने ''अडियेन उल्लान'' के द्वारा जीवात्मा के स्वरूप को प्रमाणित किया है, जिसका तात्पर्य है कि जीवात्मा सेवक है- स्वरूप से भगवान का दास है। फिर कूरेश स्वामीजी पूछते हैं - तो वेदांतम उसे ज्ञातृत्व (ज्ञानी/जाननेवाली) क्यों बताती है? श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी कहते हैं वो इसलिए क्योंकि यहाँ जीवात्मा के ज्ञाता होने का आश्रय उसके यह जानने से है कि वह भगवान का सेवक/दास है। इसलिए जीवात्मा का वास्तविक स्वरूप वह है जो आल्वार और नम्बि ने बताया है, जीवात्मा वह है जिसे इस बात का ज्ञान है कि वह भगवान का अधीन है।

एक बार जब श्री मालाधर स्वामीजी सहस्त्रगीति के किसी एक गाथा का संप्रदाय विरुद्ध अर्थ करते है तो यतिराज उस व्याख्यान को रोक देते है। श्री मालाधर स्वामीजी उसे अनुचित समझकर सहस्त्रगीति का उपदेश देना बंद कर देते है। तब श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी उस निर्गम को सुलझाते हैं और श्री मालाधर

स्वामीजी को समझाते हैं कि श्री यतिराज एक अवतार पुरुष है जो हर तरह से सुविज्ञ है और यामुनाचार्य के हार्दिक अभिप्राय को जानते है। श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी की वाणी सुनकर श्री मालाधर स्वामीजी पहले की भांति ही सहस्त्रगीति का उपदेश जारी रखते है।

एक बार जब कुछ शरारती तत्त्व यतिराज को जहर देते हैं, तब इस बारे में जानकर यतिराज उपवास शुरू कर देते हैं और प्रसाद ग्रहण नहीं करते हैं। उस समय श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी तिरुक्कोष्टियूर से आते हैं और तप्ती दोपहर में कावेरी नदी के तीर पर यतिराज उनसे मिलने जाते हैं। यतिराज उस तप्ती गर्म रेत पर श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी को साष्टांग प्रणाम (दंडवत प्रणाम) करते हैं तब स्वामीजी मौन खडे रहकर उन्हें देखते रहते हैं। प्रणतार्तिहराचार्य स्वामीजी, जो यतिराज के शिष्य थे तुरंत उन्हें गर्म रेत से उठाते हैं और श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी के इस कार्य को चुनौती देते हैं। श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी कहते हैं कि उन्होंने यह आडम्बर यह जानने के लिए किया कि यतिराज के प्राकृत शरीर (दिव्य स्वरूप) पर सबसे ज्यादा लगाव किसको है। तद्पश्चात् श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी प्रणतार्तिहराचार्य स्वामीजी को नियमित रूप से यतिराज के लिए प्रसाद बनाने का निर्देश देते हैं। इस तरह हम देख सकते हैं कि श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी यतिराज से बहुत प्रभावित थे और हमेशा उनके कल्याण के बारे सोचते थे।

इन सभी दृष्टांतों के माध्यम से हमने देखा कि श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी के कई वैभव हैं और उन्होंने ही रामानुजजी को एम्पेरुमानार का सुन्दर नाम दिया था। जिसके फलस्वरूप स्वयं नम्पेरुमाल ने हमारे संप्रदाय को एम्पेरुमानार दर्शन नाम से उध्बोधित किया है, जिसे श्री वरवरमुनी स्वामीजी ने अपनी उपदेश रत्न माला में बताया है।

हम श्री गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी के श्री चरण कमलों में साष्टांग करते हैं, जिनका आळवन्दार और एम्पेरुमानार के प्रति विशेष लगाव था।

राम नाम जपना है

चंचल मन है, कलियुग - हलचल।
राम नाम जपना है केवल।।
शबरी-कुबरी तरे जटाऊँ।
प्रथम पूज्य शिव सुत गणराऊँ।।
हनुमत् चित फल, संतन के बल।
राम नाम जपना है केवल।।
जब गनिका - मारीच - अजामिल।
राम भजन में होते शामिल।।
भवसागर तर जब मन निरमल।
राम नाम जपना है केवल।।
बालि-विभीषण जिसने तारे।
कुंभकर्ण-रावण को मारे।।
जो दुःख-संकट हो फल में हल।
राम नाम जपना है - केवल।।
गीता-वेद-पुराण सुहाते।
सुर-मुनि-नर महिमा हैं गाते।।
पास नहीं कुछ, ले तुलसी-जल।
राम नाम जपना है - केवल।।
तीनों लोक सदा रखवारे।
सुख-सम्पत्ति-गति राम दुवारे।।
'हंस' अभी से, मत सोचो कल।
राम नाम जपना है - केवल।।

- श्री बाल कवि 'हंस'

ब्रह्मोत्सव (१३.०६.१९ - २१.०६.१९) के संदर्भ में...

श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर
अप्पलायगुंटा

तेलुगु मूल - श्रीमती पी.ललिताकृष्णमूर्ति हिन्दी अनुवाद - डॉ.बी.ज्योत्स्ना देवी

वेवेलु चेतलवाडु वीडे वीडे
देवुडु गदे प्रसन्न तिरुवेंगलप्पडु

के जैसे अप्पलायगुंटा में (वेवेल) हजारों हाथों से यानि कि भक्तजनों को कई कार्यों को पूरा करते हुए श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर अभयमुद्रा की भंगिमा में भक्तजनों दर्शन देना अत्यंत विशेष है। भक्तजनों के मनोकामनाओं को पूरा करने वाला आंध्र लोगों के प्रमुख देवता तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी है। तिरुपति से १५ कि.मी. दूर पर पहाडों के बीच, हरी-भरी खेतों से भरा गाँव, बडा कमल इस प्रकार के आह्लाद (सुहावना) परिसर वातावरण में विलसित गाँव अप्पलायगुंटा है।

स्थलपुराण

कलियुग के आरंभ में लगभग ५००० सालों के पहले नारायणवन का पालन करने वाला आकाश राजा की पुत्री पद्मावती देवी से विवाह करके, सात पहाड चढने के पहले श्री वेंकटेश्वर स्वामी पद्मावती के साथ अप्पलायगुंटा के समीप रहनेवाले पहाडों के बीच, तीर्थों के बीच विहार किये थे। थोडे समय के बाद वहाँ के योगियों के पहाड में सिद्धय्या नामक योगी स्वामी के लिए तप किया था। उनकी तप से प्रसन्न होकर श्री वेंकटेश्वर स्वामी प्रत्यक्ष होकर दर्शन दिया था। उस योगी की इच्छा के अनुरूप तब से स्वामी उस पहाड के बीचे प्रसन्न वेंकटेश्वर के रूप में स्थित होगया। तब के योगियों के पहाड ही आज वेमुलकोंडा (पहाड) के रूप में पुकार रहा है।

एक बार अप्पुलय्या नामक यात्रिक तिरुमल जाते वक्त प्रस्तुत अप्पलायगुंटा के जगह थोडी देर आराम लिया। जागने के बाद तिरुमल जाते हुए वह अपने पास रहे रुपये की थैली वहीं भूल गया। रास्ते में याद आने के बाद स्वामी से प्रार्थना की कि हे स्वामी! मेरे रुपये मुझे मिल गये तो प्रजोपयोगकर शाश्वतकार्य वहाँ करूँगा। उसके बाद वह जहाँ सोया था वहीं यथा स्थिति में उनके रुपये की थैली मिला है। इससे प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के सामने एक तालाब खोदा। वह अप्पुलय्या के द्वारा खुदवा गये तालाब होने के कारण उसका नाम 'अपुलय्या गुंटा' (तालाब) नाम

यह लेख श्री जे.बालसुब्रह्मण्यमजी से विरचित 'श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामी मंदिर-अप्पलायगुंटा' (तेलुगु) प्रस्तक के आधारित है।

पडा। कालक्रम से लोगों के व्यवहार से ''अप्पलायगुंटा'' के रूप में बदल गया।

दूसरा कथन

पूर्व इस गाँव के लोग स्वामी मंदिर के बगल में एक तालाब खुदवाने के प्रयत्न किये। काम शुरु करने से लेकर मजदूरियों को जिस दिन का मजूरी उसी दिन ऋण के बिना देते रहे। इस प्रकार ऋण के बिना अंत तक उस तालाब को खुदवा दी। इस प्रकार ऋण के बिना खुदवाये गये तालाब (गुंटा) होने के कारण उसका नाम ''अप्पुलेनि(ऋण)गुंटा'' नाम पडा। बाद में जनव्यवहार में ''अप्पुलेनि(ऋण)गुंटा'' ही ''अप्पलायगुंटा'' के रूप में व्यवहार में रहकर अंत में उस गाँव का नाम भी वहीं स्थायी के रूप में रह गया।

ऊपर के दोनों कहानियों में दूसरा सत्य मानते थे। क्योंकि प्राचीन कवियों के पत्रों में, शाशनों में, ''अप्पुलेनि गुंटा'' का नाम को संस्कृतीकरण करके ''अनृणसरोवर'' का नाम प्रयोग में आया था।

चारित्रिक विशेषताएँ

शासनाधारों के द्वारा स्पष्ट होता है कि - लगभग हजार सालों से ज्यादा चारित्रिक प्रसिद्धि रहे कार्वेटिनगर

प्रभुवों के पालना में इस अप्पलायगुंटा गाँव रहा था। इनके राज्य के वायुव्य में और दक्षिण में उत्तर आर्काट, पूरब में चेंगलपट्टु जिला, ईशान्य दिशा में श्रीकालहस्ति राज्य हैं। यानि कि तिरुमल, तिरुपति, तिरुचानूर, नागलापुरम, नारायणवनम्, तिरुत्तनी, शोलिंगर आदि अनेक क्षेत्र और मंदिर, ९०० गाँव यहाँ के आस-पास में स्थित है। इतना ही नही तिरुमल, तिरुपति, तिरुचानूर, अप्पलायगुण्टा के आलय उत्सवों में कार्वेटिनगर के राजा प्रमुख भूमिका निभाते थे, ऐसा माना जाता है कि कार्वेटिनगर के राजा तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी को रत्न का मुकुट, सूर्यकठारि नामक नंदक खड्ग को समर्पित किये थे।

कार्वेटिनगर के राजाओं में कटारि साल्वमाकराज श्री वेंकटपेरुमाल्राज अत्यंत प्रसिद्ध है। ये राजा स्वामीजी के अत्यंत भक्त है। ये प्रभु अप्पलायगुण्टा के श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामीजी को बहुत सारे ढांव और उपहार दिया। समारोह और जुलूस आयोजित किए गये थे। श्री वेंकटपेरुमाल्राजा जी ने १७५० में पाँच फीट ऊँचे वाले दो दीपस्तंभ स्वामीजी को समर्पित किये थे, जो अब भी हम अप्पलायगुण्टा श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामीजी के मंदिर में देख सकते है। यह तले हुए कानून के बाई ओर तलवार का निशान है, उस तलवार के दोनों तरफ सूर्यचन्द्र के मुद्रा और नीचे वराह मुद्रा चित्रित किया गया है।

श्री माकराज वेंकटपेरुमाल राज कवि, विद्वान और संरक्षक भी है। उन्होने अपने दरबार में विजयनगर साम्राटों की तरह अष्टदिग्गज कवियों को अपने आस्थान में उन्होने स्थान देकर उनको आश्रय दिया। उनमें से सारंगपाणि प्रसिद्ध वाग्गेयकार है। उनके द्वारा जो कीर्तन गाये गए वे सारंगपाणि पद के नाम से प्रसिद्ध है। इनके पदों में प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी को विशेष स्थान मिला है। तालपाक अन्नमाचार्य के पोता छोटा तिरुमलाचार्य के द्वारा जिन कीर्तनों का आलाप किया गया उनमें प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के साथ-साथ अलमेलुमंगा माता और गोदादेवी माता भी है। इस मंदिर में भगवान बालाजी के मंदिर के साथ गोदादेवी और अलमेलुमंगम्माजी के मंदिर भी है। प्रसन्न वेंकटाचलपति नाम से और कही यह मंदिर देखनों को नही मिलता।

ब्रिटिश काल तक यह मंदिर यानी अप्पलायगुण्टा आलय के धर्मकर्ता कार्वेटिनगर के राजा ही थे। इस कारण से मंदिर की व्यवस्था उन्ही के हाथों में थी। तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने इस मन्दिर को अपने अधीन लेते हुए इसका जीर्णोद्धार किया और ३० अप्रैल २००६ को इसका महासंप्रोक्षण करके इसके विकास में जुट गया।

आलय निर्माण शैली

पूर्व दिशा में निर्मित किया गया यह आलय ईंट की दीवारों से घिरा हुआ है। इसका प्राकार बहुत ही विशाल है। प्रवेश द्वार पर, महाद्वार गोपुरम का निर्माण केवल चट्टानी पत्थर के साथ किया गया था। प्रवेश द्वार को पार करने के बाद १० फुट के दूर में ध्वजस्तंभ, उसके पास ही गरुड मंडप पश्चिमी मुख यानी श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी के अभिमुख से सटे हुए है। वहाँ गरुत्मंत विग्रह तिरुमल, तिरुपति के मंदिरों में जैसा ही है। पहले प्रधान प्राकार (दिवार) के बाद और एक प्राकार जो अधूरा है वह मंदिर के चारों ओर है। इसकी ऊँचाई सिर्फ दो फुट है। इन दो दीवारों के अंदर प्रदक्षिणा आवरण में स्वामीजी के गर्भालय के नैरुति मूल श्री पद्मावती माताजी का छोटा मंदिर और वायुमूल या वायु स्थान में श्री गोदादेवी (आण्डाल) जी के मंदिर स्थित है। यहाँ पद्मावती माताजी की मूर्ति तिरुचानूर में स्थित माताजी मूर्ति से बडा है।

दीवारों के बीच गरुड मंदिर के सामने प्रधान आलय है। यह तीन भागों में बना है यानी मुखमंडप, अंतराल, गर्भालय, इस मुखमंडप में १६ स्तंभ है। उस मुखमंडप के सामने चार स्तंभ के बीच मंडप व्यवस्थित किया गया है।

इस मंच पर उत्सवमूर्तियों का कल्याण पूर्व आदि किया जाता हैं। मंडपम् दिवार पर उत्तरी दिशा में दीवार के पास आल्वार विग्रहों को प्रतिष्ठित किया गया है। इनमें रामानुजजी का विवाह भी है। इस मुखमंडप के बाद छोटा सा व्यवधान है। गर्भालय में श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी का विवाह प्रतिष्ठापन किया गया। तिरुमल में जिस तरह स्वामी जी शंख-चक्र धारण करके कटि हस्त चतुर्भुज वेंकटेश्वर स्वामी के रूप से दर्शन देते हैं उसी प्रकार वह भी है। यहाँ के प्रसन्न वेंकटेश्वरजी प्रसन्न चित्त होकर अपने वरदहस्त के साथ भक्तों को दर्शन देते है। तिरुमल में श्रीवारि के हृदय में श्री महालक्ष्मी माताजी स्थित है।

तिरुमल क्षेत्र की तरह यहा भी हर वर्ष ब्रह्मोत्सव एवं पवित्रोत्सव का निर्वाह किया जा रहा है। इस गर्भालय में मूलमूर्ति ही नही बल्की श्रीदेवी भूदेवी समेत प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामीजी के उत्सव विग्रह तीन फूट लम्बे वाले है। इतना ही नही उत्सवमूर्ति, चक्रत्ताल्वार आदि विग्रह यहाँ है। गर्भालय के ऊपर एक कलश गोपुरम है। पहले प्राकार के अंदर बायें तरफ आग्नेय मूल में पाकशाला, यागशाला है। इस पाकशाला में श्री प्रसन्न आंजनेय स्वामी का आलय, मंदिर के दीवार के बाहर मंदिर के सामने १०० फुट के दूर स्थित है। यहाँ भी तिरुमल तिरुपति आलयों के सामने जिस तरह हनुमानजी की मूर्ति होती है उसी तरह यहाँ भी हाथ जोडकर प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामी जी के मंदिर के सामने खडे है। हर रविवार को प्रसन्न हनुमान जी को पंचामृताभिषेक आदि सेवाएँ की जाती हैं।

उत्सव

हर साल ज्येष्ठ मास में श्रवणा नक्षत्र के अंत तक दस दिन अप्पलायगुण्टा श्री वेंकटेश्वर स्वामी के ब्रह्मोत्सव बडे आनंद और उत्साह के साथ किया जाता है। इनमें गरुडोत्सव और रथोत्सव अत्यन्त प्रधान उत्सव है। अखरी दिन यानी श्रवणा नक्षत्र के दिन मंदिर के पुष्करिणी में चक्रस्नान किया जाता है। ब्रह्मोत्सव के दिनों में हर दिन डोलोत्सव भी होता है। वैंकुण्ठ एकादशी के दिन जुलूस वैकुण्ठ द्वादशी के दिन चक्रस्नान होता है। उगादि के दिन पंचांग श्रवण आदि उत्सव बडे वैभव के साथ किया जाता है। हर शुक्रवार अभिषेकम किया जाता है। पवित्रोत्सव और रथसप्तमी के दिन जुलूस होता है।

इतना वैभव एवं महिमामय श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामी जी का दर्शन करने से अपना जीवन धन्य होगा।

जलज-वासिनी अलमेलुमंगा के जल-विहारोत्सव

(नौका - विहार)

तेलुगु मूल - श्री जे.बालसुब्रह्मण्यम्

हिन्दी अनुवाद - श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण

(१३-०६-२०१९ से १७-०६-२०१९ तक श्री माताजी के प्लवोत्सव के संदर्भ में)

जलजा यानी कमल है। वह सहस्रों दलों का सोने का कमल है। शुमार पाँच हजार वर्ष पूर्व, श्री वेंकटेश्वर के तपःफल के अनुरूप उस सोने के पद्म में साक्षात् ''श्रीमहालक्ष्मी'' अवतरित हुई थी! वह शिशु ''पद्मावती'', ''अलर्मेल्मंगा!'' नामों से पुकारा गया, क्योंकि वह पद्म में आविर्भवित हुई थी! - यानी पुहुप पर प्रकाशित दिव्यवनिता!! वही अलमेलुमंगा है।

अब ही नहीं, कभी किसी दिन क्षीरसागर की कन्या बन कर, पद्मासनी होकर अवतरित वह देवी, क्षीरसागर पर विराजमान श्री वेंकटपति की देवी बन कर विराजमान हो रही है। ऐसे क्षीराब्धि की कन्या बन कर, जलज-निवासिनी बन कर, भृगुमहर्षि की तनया होकर, भूमिजा (सीता) के रूप में, कलियुग में आकाश राजा की पुत्री ''पद्मावती'' बन कर - ऐसे अनंत काल के गमन में कई बार अवतरित हुई थी!!

इस प्रकार, परंधाम आनंदनिलय की पटरानी श्री पद्मावती देवी ही तिरुमल के आनंदनिलय भगवान श्रीनिवास के वक्षःस्थल में ''व्यूहलक्ष्मी'' के रूप में, तिरुचानूर क्षेत्र में ''शांतिनिलय'' नाम के सोने के महल में ''पद्मावती'', ''अलमेलुमंगा'' नामों से अर्चामूर्ति बन कर विराज कर, भक्त सबको भरपूर, बेशुमार आनंदमान मनस्क बना रही है!

यहाँ अद्भुत ढंग की एक बात!! - - -

सूर्यस्य रश्मयो यद्वत ऊर्मयश्चांबुधे रिव
सर्वैश्वर्य प्रभावेन कमला श्रीपतेः तथा।।

सूरज से सूर्य की किरणों के, समुंदर से उसकी लहरों के बीच हुए संबन्ध की तरह है - तिरुमल परंधाम श्रीनिवास और तिरुचानूर श्री पद्मावती का अन्योन्य संबन्ध!!

कहना पड़ेगा कि तिरुमल के श्रीवारि के वक्षःस्थल में नित अनपायिनी बन कर, तिरुचानूर में अर्चामूर्ति के रूप में होते हुए, निरंतर जिस किसी भक्त की किसी भी इच्छा की पूर्ति करती हुई, सबकी कामनाओं तथा माँगों की पूर्ति करती हुई, मनोभीष्ट सिद्ध करती हुई रही है ममतामयी माता श्री पद्मावती देवी।

गंभीर रहते हुए भय उत्पन्न करने वाले समुद्रराजा की पुत्री है लक्ष्मीदेवी। फिर भी वह माँ प्रशांत स्वरूपिणी देवी बन कर दर्शन देने वाली लोकमाता है! और भी, उसी समुंदर से इसी लोकनायिका देवी के साथ-साथ सबकी इच्छाओं की परिपूर्ति करने वाली कामधेनु का भी जनम हो पाया था। कल्पवृक्ष की भी पैदाइश हो पायी थी और इसी भीकर सागर से 'चिंतामणि' भी उत्पन्न हुई थी।

इन तीनों से भी अधिक महिमाओं तथा वरदानों को उछलने वाली अमर-वंदिता के नाम से ख्यातनामा हुई थी।

माँ अलमेलुमंगा!! इतना ही नहीं, चन्द्र की सहोदरी यह माता अमृत का भी नज़दी की रिश्तेदार है। ऐसी महान माता भक्तों को शीतल छाया को प्रदान करने के साथ-साथ, खुशियाँ बाँटने में कोई कसर नहीं छोडती और कतई नहीं छोड़ती!!

श्रीवैकुंठ के क्षीर-सागर में आदिशेष नाम के सहस्र फणियों वाले घन साँप की बडी नाँव पर, अपने स्वामी के संग डोलने वाली संपदाओं की माँ, भूलोक-वैकुंठ-रूपी तिरुमल में अपने श्रीवारि के हृदय-रूपी नाव पर तैरने वाली अलमेलुमंगा, आज अभी - गर्मियों की उष्णोग्रता के पूरे कम न होने वाले इस ज्येष्ठमाह में, पूनम की रातों में ठंडे उस पद्मसरोवर में उन पुण्य जलों में जल-विहार व नौका विहरण करती हुई अपने भक्तों को दर्शन देना- देखने वाले भक्तों के भाग को कैसे नापें और किस विधि उन्हें सराहें?!

जलज-निवासिनी अलमेलुमंगा इस कलियुग में, आज भी अपने मायके रूपी पद्मसरोवर के उन पावन ठंडे जलों में विहरित मेरे दर्शन करो रे, मेरे पुत्रों, भक्तों! कहती हुई भक्तों पर वांछित वरदान फेंकती संपदाओं की माँ पद्मावती के आँख भर आपाद-मस्तकीय दर्शन कर तर लें!! इष्टार्थ-सिद्धि दुगुना-तिगुना पाकर खुश होवें! उस जगन्माता के भाग लेने के जल-विहारोत्सवों का आँख-भर और मन-भर समाचार जान लें!!

ज्येष्ठमास में एकादशी से लेकर पूनम की रात तक पाँच दिनों तक मनाये जाने वाले प्लवोत्सवों (नौका-विहार) में, पहले दिन सायं समय पर श्री रुक्मिणी, सत्यभामा समेत श्रीकृष्ण स्वामीजी पद्मसरोवर में नौका पर आरूढ़ होकर विचरने के लिए मंदिर से छत्र-चामर-बाजा-भजंत्रियों के गौरव-मर्यादाओं के साथ श्रीपीठ (तिरुच्चि) पर आसीन होकर निकल कर, मंदिर के प्रदक्षिण के तौर पर पुरवीथियों में पयन करते हुए पोखर पर पहुँच कर नाँव पर अधिरोहण करते है। आँखों को चमकाते हुए, चकाचौन्ध करने वाली के प्रकाशमान दीपों के प्रकाश में, वेद-नादों के बीच, मंगल वाद्यों के बजते-बजते, अपने १५वीं सदी के महान् भक्त एवं पद-रचनाकार अन्नमय्या के विरचित संकीर्तन सुनते-सुनते अपनी देवेरियों की जोडी के साथ श्रीकृष्ण स्वामी सर्व शोभायमान ढंग से सजे और अलंकृत नौका का अधिरोहण कर तीन बार सरवर में प्रदक्षिण के तौर पर विहरण करते हैं। पोखर के किनारे पर चारों तरफ हजारों की तादाद में भक्तजन श्रीस्वामीजी का दर्शन कर लेते हैं। तदनंतर में तिरुच्चि पर श्रीस्वामीजी अपना मंदिर पहुँच जाते हैं!!

अब दूसरे दिन द्वादशी-तिथि के दिन सायंकाल, तिरुच्चि (वाहन) पर श्रीदेवी-भूदेवी समेत होकर श्री सुंदरराजस्वामीजी जुलूस निकालते आकर, पोखर में उपस्थित नौका पर तीन बार प्रदक्षिण के तौर पर विहरण कर, आरती जोता पाकर, मंदिर पहुँच जाते हैं।

तीसरे दिन त्रयोदशी की तिथि पर सन्ध्या के समय पर श्री पद्मावती देवी श्रीपीठ (तिरुच्चि) के ऊपर सर्वाभरण, समस्त दिव्य सुगंधित पुष्प हारों से अपने को सजा कर, नगर-यात्रा करते हुए पुष्करिणी पर पधार कर, नौका-उत्सवों में भाग लेती हैं। पोखर में तीन प्रदक्षिणाएँ देकर, भक्तों के नीराजनों को स्वीकारने

के पश्चात्, तिरुच्चि पर ही यान करते हुए आलय में प्रविष्ट हो जाती हैं।

पुनः चौथे दिन चतुर्दशी तिथि की रात चाँदिनी में श्री पद्मावती देवी तिरुच्चि पर शोभायात्रा नगर की गलियों में करती हुई महावैभवोपेत ढंग से पोखर के जलों में - वेदनाद, भजंत्री, संकीर्तनों के गायनों के कोलाहल के बीच पाँच बार प्रदक्षिणा के तौर पर विचरती हुई भक्तों के मन लुभावना नौकाविहार करती है!! जल-विहार के समाप्त हो जाने पर, पोखर से श्री पद्मावती देवी सोने के गजवाहन पर पधार कर ''गजलक्ष्मी'' की वेष-भूषा में भक्तों को दर्शन देती हुई मंदिर प्रस्थान कर जाती हैं!!

अब पाँचवे दिन पूनम को रात के पूर्ण-चन्द्र की ज्योत्स्नामय रश्मियों में श्री पद्मावती देवी अपने तिरुच्चि वाहन पर शोभायात्रा निकालती हुई आकर, खूब वैभवपूर्ण ढंग से सजे हुए नौका के सिंहासन पर अधिरोहण कर, पद्मसरोवर के ठंडे एवं अमृतमय जल में सात प्रदक्षिण का आचरण कर, अपने भक्तजनों के नेत्रों में आनंद डोलिकाओं को झुला कर दर्शन देती हैं। भजंत्रियों के अन्नमय्या के रागालापों के बीच और दिव्य मंगल आरतियों को शोभा में अनुपम छट! बिखरायेजी!! तत्पश्चात अलमेलुमंगादेवी पुष्करिणी में से सुवर्ण गरुडवाहन पर बाजा भजंत्रियों के साथ भक्तों की आरतियाँ स्वीकारती हुई, नगर की गलियों में शोभायमान रीति से यात्रा करते हुए मंदिर में प्रवेश करते है।

ऐसे भरी पूनम की रात की धगद्धगायमान ज्योत्स्ना में जल-विहार करती हुई जगज्जननी, चन्द्र की सहोदरी और सागर सम्राट् की पुत्री माता श्री पद्मावती देवी का भरपूर नेत्रों से दर्शन कर, इस प्रकार मनःपूर्वक प्रार्थना कर लें -

अज्ञानतिमिरं हंतु, शुद्धज्ञान प्रकाशिका।
सर्वैश्वर्यप्रदा मेऽस्तु, त्वत्कला मयिसंस्थिता।।

स्वच्छ और शुभ्र कौमुदी के प्रकाश में विहार करती हुई, अज्ञान के अंधकार को हटा कर, निर्मल ज्ञान-रूपी रश्मियों को, समस्त संपदाओं का प्रसादन कर सकनेवाली हे अलमेलुमंगा! अपने तेजस की एक चित्कला को मुझ अकिंचन पर प्रसारित कर, मेरे समस्त जीवन-यान को शोभामय बनाओ!!

ओं श्रियै नमः!!

श्रीकृष्णस्वामी का मंदिर

श्री पद्मावती देवी के मंदिर से लगे हुए दक्षिण की दिशा में श्री बलराम तथा श्रीकृष्णों का मंदिर है। कुरुक्षेत्र संग्राम के समय में बलराम यात्रा करते हुए यहाँ शुकमहर्षि के आश्रम में आया था। युद्धानंतर बड़े भाई को ढूँढते हुए श्रीकृष्ण भी यहाँ पहुँच गया था। श्री शुकमहर्षि ने उन दोनों को आतिथ्य देकर, उसके फलस्वरूप उन दोनों भाइयों को वहीं आश्रम में विराजने का अनुरोध किया था। वही उन दिनों का वह स्मरण श्रीकृष्ण-बलरामों का मंदिर था, जो उस महत्तर घटना का स्फुरण कराता है!! इस मंदिर में श्री रुक्मिणी और सत्यभामाओं के समेत हो करके श्री वेणुगोपालमूर्ति के उत्सवमूर्ति बन कर होने वाले यह स्वामीजी पहले दिन संपन्न होने वाले नौका-उत्सवों में भाग लेकर नेत्र पर्व बन कर जल-विहरण करते हैं।!!

श्री सुंदरराजस्वामी का अवतारोत्सव

श्री पद्मावती देवी के मंदिर के प्रांगण में ही दक्षिण की ओर पूरब के मुख पर श्री सुंदरराजस्वामीजी का मंदिर है। १५-१६ शताब्दियों से पूर्व अति प्राचीन इस मंदिर के गर्भालय में, तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी की याद दिलाने वाली श्री सुंदरराजस्वामीजी की आठ फुट ऊँची शिलामूर्ति विराजमान है। भाले पर सफेद टीकों, शंख और चक्रों तथा वरदायी भंगिमा के हस्त के साथ चतुर्भुज बन कर, अत्यंत सुंदरमूर्ति के रूप में, सार्थक नामधेय होकर विराजमान श्री सुंदरराजस्वामीजी की दोनों ओर श्रीदेवी, भूदेवी की मूलमूर्तियों का दर्शन हो रहा है।

कई वर्षों के बाद, यह आलय महंतों के शासन में १९०६ के ज्येष्ठमास में उत्तराभाद्रा वाले नक्षत्र के हुए दिन पर जीर्णोद्धरण किया गया है। उस दिन **''अवतारोत्सव''** नाम से तीन दिनों तक गर्भालय के शिखर के ऊपर सुवर्ण कलश की प्रतिष्ठा, महाकुंभाभिषेकों का निर्वहण किये गये थे। फिर से सौ साल पश्चात् २००६ जून (ज्येष्ठ माह) में उत्तराभाद्र वाले नक्षत्र हुए दिन परिसमाप्ति हुए जैसा तीन दिनों तक **''महाअवतारोत्सव''** निर्वहित हुए थे। उस दिन से हर साल ज्येष्ठमाह में तीन दिनों तक **''वार्षिक अवतारोत्सवों''** का निर्वाह होता रहना एक विशेष विषय है!! इस साल २०१९ जून २३ से २५ तक तीन दिनों तक श्री सुंदरराजस्वामीजी के वार्षिक अवतारोत्सवों का निर्वाह किया जाता हुआ आ रहा है।

ये तीन दिन स्नपन तिरुमंजन, अर्चना, निवेदनों के साथ-साथ समय पर नगर-यात्रा का भी निर्वाह किया जाता है। पहले दिन सायंकाल श्रीदेवी-भूदेवी समेत श्री सुंदरराजस्वामी महाशेषवाहन में, श्रीस्वामीजी अकेले ही - क्रमशः दूसरे व तीसरे दिन सायं समयों में हनुमंतवाहन तथा गरुड़वाहन में भी जुलूस में ले जाया जायेगा। पद्मसरोवर में संपन्न होनेवाले प्लवोत्सव में दूसरे दिन ये स्वामीजी नौका में जल-विहार करते हैं।

तिरुमल श्रीवारि ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव

तेलुगु मूल - श्रीमती एम.उत्तरफल्गुनी हिन्दी अनुवाद - डॉ.बी.के.माधवी

भगवान के बिंब को प्रतिष्ठित करके, अर्चनादियों से पूजा करके, इसके द्वारा सर्व सुखों को पाना वैदिक मार्ग में श्रेयोदायक है। यही उत्कृष्ट है; सर्वदा आचरणीय भी है। उस बिंब की आकृति का परिशीलन करने पर वह चित्र, चित्रार्थक, चित्राभास नामक तीन प्रकार के हैं। इसमें सर्वांगों से रहनेवाला बिंब चित्र है। सर्वांग अर्थदृश्य चित्रार्थक है। अतिशय कुड्यादि पर लिखा हुआ बिंब चित्राभास है। (समूर्त.१८, ११-३) ये तीनों प्राण प्रतिष्ठा करने के लिए समान अर्हता पायी हैं। इसमें चित्र नामक पहले बिंब को महांग - अंग - उपांग - प्रत्यंग जैसे अवयव के विभाग है। उनमें -

महांग :- कंठ - उदर - शिर - दक्ष - बाहु - कोष्ठ - ऊरु - पाणि - कटि - जांघ!

२०१९, जून १४ से १६ तक श्रीवारि ज्येष्ठाभिषेक के संदर्भ में...

अंग :- नेत्र - नास - ओष्ठ - पैर - कर्ण - अंगुली। और उपांग :- केश - रोम - नखादियाँ।

प्रत्यंग :- मुकुट - भूषण - अंबर - शंखचक्र - शिरश्चक्र - पादपद्मायुध - पीठ - प्रभाछत्र। (क्रिया-२३, ८०-२)।

ऊपर बताये गये अंग, उपांग, प्रत्यंगों से युक्त प्रतिमा को तैयार करके मंदिर में प्रतिष्ठित करके हरदिन स्नपन आदि उपचार विधि पूर्वक करनी है। उनमें नित्य होने वाले स्नपन आदि क्रियाओं को, कारणांतरों से या अंग, उपांग, प्रत्यंग भिन्न होने पर उसको शांतिमंत्रों से प्रायश्चित्तोक्त रीति से तुल्य होम के द्वारा अंगसमुत्पत्ति (संधान) करके पुनःप्रतिष्ठा करनी है।

यदि महांग भिन्न हो तो (संधान योग्य बेर नहीं हो तो) उस बेर को पृथ्वी में रखकर उस पर अग्निकुंड निर्माण करके अंग होम आदि कार्यक्रम करके उस द्रव्य से

ही पहले के जैसे बिंब को तैयार करके पुनःप्रतिष्ठा करनी है।

अंग - उपांग - महांग - प्रत्यंगों से युक्त सारे बिंब स्नपन आदि विधियों से क्षीण होते समय भृगु महर्षि ने क्रियाधिकार में बताने के जैसे सर्वप्रयत्न से उस बिंब की रक्षा करने की आवश्यकता जरूर है। इसीलिए बिंब रक्षण के लिए एक उत्सव क्रिया बताया गया है। उसी को ज्येष्ठाभिषेक, सुगंधतैल समर्पणोत्सव आदि नाम हैं। इसमें प्रधान प्रक्रिया बिंब को कवच धारण के बारे में थोडे जानेंगे।

ज्येष्ठ मास में ज्येष्ठानक्षत्र के दिन इस उत्सव क्रिया का निर्वहण करना है। यागशाला में पैंडरीक अग्निकुंड, सभ्याग्नि को प्रत्येक रूप से निर्माण करना है। कूर्म पीठ पर आचार्य आसीन होकर उस सारे क्रिया विधि का आचरण करना है। महाव्याहृतियों से युक्त वैष्णव-विष्णुसूक्त-सर्वदैवत्य-पारमात्मिकादियों से होम करके अनुहोम करना है। पांडरीक अग्नि कुंड के पास आकर महाशांति होम करना है। पूर्णाहुति युक्त अस्तहोम क्रिया का आचरण करना है। ऊपर बताने के जैसे कवचविधि का सब क्रियाविधि को करना है। नित्यपूजा विधान से देवदेव की आराधना करना है। खीर आदि महाहविस्सु का निवेदन करना है। क्षमा मंत्रों से देवदेव की प्रार्थना करना है। ब्रह्मघोष पूर्वक शांतिवाक्यों का पठन करके उस कार्यक्रम की परिसमाप्ति करनी है। साधु जन संरक्षक, दुष्ट जन शिक्षक, वेंकटाद्रि निवास स्वामी वेंकटेश्वर श्री श्रीनिवास स्वामी को दिव्य वैखानस आगमोक्त रीति से वज्र, मुत्यंगि(मोती), स्वर्ण कवच समर्पण से त्रयाह्निक रूप से होने वाले इस ज्येष्ठाभिषेक भक्तजनों के लिए कामधेनु के रूप में विराजित होकर सर्वसुखों की प्राप्ति के लिए हेतुभूत होता है। उसी तिरुमल स्वामी ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव विधान के बारे में सविस्तार पूर्वक जानेंगे।

स्वामीजी के मूलविराट रूप में दिव्य सान्निध्य शक्ति को, कौतुकबेर में रहे विग्रह में नित्य (हर दिन) आवाहन करके, विधिपूर्वक आराधना करना है। यह ऐहिक, आमुष्मिकफलप्रद के रूप में बताया गया है। अर्थात् किसी भी प्रकार के भौतिक इच्छाएँ नहीं रहते हुए, मोक्ष की प्राप्ति के लिए स्वामी की सेवा करने वाले, ऐसे ही अपने इष्टकाम्यार्थसिद्धि के लिए स्वामी का दर्शन करने वाले, ऐसे दोनों वर्गों के लिए जरूर कौतुक मूर्ति की आराधना करने के लिए वैखानसागम में बताया गया है।

इस प्रकार तिरुमल में ६१४वा साल में पल्लवरानी सामवै पेरुंदेवी, चांदी विग्रह श्री भोग श्रीनिवास मूर्ति को बहूकरण किया है। वह कौतुक बेर के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। कालक्रमानुसार मंदिर में उत्सवों को जनरंजक रूप में निर्वहण करने के लिए १३३९वा साल में श्रीदेवी-भूदेवी सहित श्री मलयप्पस्वामी के पंचलोह विग्रह की प्रतिष्ठा हुई है।

स्नपन बेर के रूप में उभयदेवेरियों के सहित श्री उग्र श्रीनिवासमूर्ति, बलिबेर के रूप में श्री कोलुवु श्रीनिवास मूर्तियों को नित्य पूजाओं का निर्वहण हो रहा है। स्वामी के मंदिर में 'नित्यकल्याण-हरातोरण' के रूप में साल भर ३६५ दिनों में लगभग ४७० उत्सव अत्यंत वैभव के साथ नेत्र पर्व के रूप में निर्वहण किया जा रहा है। वैखानसागमोक्त के

रूप में किये जाने वाले इन उत्सवों के अंतर्गत श्री मलयप्पस्वामी को अभिषेक, स्नपन तिरुमंजनों का निर्वहण किये जा रहे हैं।

ऐसे, इस प्रकार के अभिषेकों का निर्वहण करने से, बिंबों के मूलस्वरूप में थोडा बदलाव, परिवर्तन होने की संभावना है। इसके परिष्कार के लिए ९० के दशक में स्वामीजी के मंदिर में संवत्सरोत्सव के रूप में **'ज्येष्ठाभिषेक'** नामक उत्सव शुरू करके शास्त्रोक्त के रूप में निर्वहण किया जा रहा है। भृगु महर्षि ने प्रकीर्णाधिकार में इस प्रकार बताया गया है कि - ज्येष्ठ मास में चंद्र ज्येष्ठा नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा के दिन देवदेव विष्णु की प्रतिमा को विशेष सुगंधतैलादियों को समर्पित करना है। इसी को **'सुगंध तैल समर्पण उत्सव'** के रूप में क्रियाधिकार में बताया गया है। क्रियाधिकार के द्वारा विदित होता है कि- इस उत्सव को वैखानस आगम के अनुसार निर्वहण करने से विष्णु के दिव्य अर्चावतार अत्यंत तेजो रूप से प्रकाशित होता है। तिरुमल में ज्येष्ठाभिषेक को ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी के दिन शुरू करके, ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी और ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन अंत होने के जैसे तीन दिन अत्यंत वैभव के साथ निर्वहण किया जा रहा है। ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव के १५ दिनों के पहले स्वामी के उत्सवमूर्तियाँ - श्रीदेवी-भूदेवी समेत श्री मलयप्पस्वामी को गत साल समर्पित किये गये स्वर्णकवचों को बदलवाते हैं।

इस उत्सव निर्वहण के लिए प्रत्येक रूप से 'कंकणभट्टर' नाम से पुकारने वाले वैखानस अर्चक को प्रधानाचार्य के रूप में विधियों को दिया जाता है। प्रकीर्णाधिकार में बताने के जैसे आचार्य स्वामी उत्सवमूर्तियों पर रहे स्वर्णकवच को 'परिलिखित' नामक मंत्र से अच्छा परिशीलन करना है। इसके बाद उन स्वर्ण कवचों में कोई लोप हो तो उनको अच्छा करके सुशिक्षित शिल्पि के द्वारा उनको ठीक करके, तैयार करवाकर रखने का शास्त्रवचन है।

ज्येष्ठाभिषेक के पहले दिन स्वामी को माध्याह्निक आराधना होने के बाद श्री मलयप्पस्वामी को उभय देवेरियों के साथ विमानप्राकार परिक्रमा से, संपंगि प्राकार के यागशाला में **'अष्टोत्तर शतकलश स्नपन तिरुमंजन'** नामक वैदिक प्रक्रिया को १०८ कलशों से निर्वहण किये जाते हैं। कल्याणमंटप (विवाह मंच) के यागशाला में वेंचेपु (पहुँचाते) करते हैं। वैखानस भगवच्छास्त्रविधि के रूप में देवता प्रर्थना, विष्वक्सेन की आराधना, स्वस्ति पुण्याहवचन, अंकुरार्पण, रक्षाबंधन, अग्निप्रणयन आदि प्रक्रियाओं को शास्त्रोक्त रूप से, वेदपुरस्सर के रूप में निर्वहण करते हैं। उसके बाद इस उत्सव को सरकार (ति.ति.दे.) की ओर से कार्यनिर्वहणाधिकारी के दंपतियों को संकल्प बताया जाता है। यागशाला में १०८ कलशों को, ९ कलशों को एक पद्धति के अनुरूप ४ पंक्तियों में रखा जाता है। ऐसी पंक्तियाँ तीन रहते हैं। बीच में रहे प्रधान कलश में वरुण देवता को आवाहन करके उपचार समर्पण किये जाते हैं। प्रधान होम, प्रायःश्चित होम, अंतहोमों का पूर्णाहुति करके अग्नि उपस्थान करने से होम कैंकर्य समाप्ति हो जाता हैं। इसके बाद, स्वामी के उत्सवमूर्तियों को १२ तरह के द्रव्यों से और दूध, दही, शहद, नारियल का पानी, हल्दी, चंदन आदि से विशेष स्नपन तिरुमंजन का निर्वहण किया जाता है। शाम को श्रीदेवी भूदेवी समेत श्री मलयप्पस्वामी को अत्यंत मूल्यवान, मुग्धमनोहर, वज्रकवच से अलंकृत करके, चार माडावीथियों में उत्सव का निर्वहण करते हैं। इसी प्रकार बाकी दो दिन सुबह अष्टोत्तरकलश स्नपन और दूसरे दिन शाम को मोती कवच, तीसरे दिन शाम को स्वर्णकवच से तिरुवीथि उत्सव का निर्वहण किया जाता है। तीसरे दिन सुबह स्नपन के बाद कवच प्रतिष्ठा होता है।

तीसरे दिन सुबह अष्टोत्तर स्नपन के भाग में होम आदि वैदिक प्रक्रियाओं के पूरा होने के बाद, पंच गव्य (गोक्षीर, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र, गोमय) की अधिदेवता का आवाहन करके, उपचार समर्पण करके, बाद में कवच को वास्तु होम करते हैं। पंचगव्य से कवचों

को प्रोक्षण करके, वास्तु शुद्धि करवाकर, स्वर्ण कवचों को स्वामीजी के उत्सवमूर्तियों को समर्पण करने की योग्यता बनाते हैं। (पवित्रीकरण करते हैं)। पंचदश सूक्तियों से अभिमर्शन क्रिया का कवचों का निर्वहण करके, इसके बाद 'विष्णोम्नकं...' नामक मंत्र से स्वर्णकवचों को, श्रीदेवी भूदेवी समेत श्री मलयप्पस्वामी को दृढ से, स्थिर रहने के जैसे समर्पण किये जाते हैं।

पूरे साल भर स्वामी के उत्सवमूर्तियों के दिव्य तिरुमेनु स्वर्णकवचों से शोभित रहता हैं। लेकिन ज्येष्ठाभिषेक के उत्सव के समय में ही स्वामी के असली अर्चारूप दर्शन भक्तजनों को मिलता है। वैसे ही साधारण रूप से अभिषेक द्रव्य जैसे - दूध, दही आदि से स्वामी के चरणों को अभिषेक करते हैं। क्योंकि उत्सवमूर्तियाँ स्वर्ण कवच से रहते हैं इसलिए अभिषेक शिरसादि से नहीं किया जायेगा। लेकिन, ज्येष्ठाभिषेक के समय में ही श्री मलयप्पस्वामी को शिरसादि पाद पर्यंत सकल द्रव्यों से अभिषेक किये जाते हैं।

भृगु महर्षि ने प्रकीर्णाधिकार में बताया गया है कि - उन मूर्तियों के रूपों के अनुरूप कवचों को सर्वप्रयत्नों से तैयार करके, बिंबों को सुरक्षित रखने के लिए, यही 'ज्येष्ठाभिषेक' के उत्सव की परमार्थ है। वैसे ही तीसरे दिन स्वर्णकवच समर्पण के पहले स्वामीजी की मूर्तियों को सुगंध तैल का समर्पण करके, निजतिरुमेनु पर चंदन, उसके बाद रेश्मी सफेद वस्त्र धारण करके, कवचधारण करते हैं। इस प्रकार के महत्तर ज्येष्ठाभिषेक महोत्सव तिरुमल में अंगरंग वैभव के साथ, नेत्र पर्व के रूप में तीन दिन निर्वहण किये जाते हैं।

इस उत्सव में भाग लिए सभी भक्तजनों को श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दिव्य आशीर्वादों के साथ सब कार्य निर्विघ्न रूप से पूरा हो जायेगा। इस उत्सव में भाग लेकर स्वामीजी कृपा का पात्र बन जायेंगे।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

'सप्तगिरि', 'स्वर्ण जयंती पत्रिका विशेष' में आलेखों का स्वागत!!

तिरुमल तिरुपति देवस्थान का आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका 'सप्तगिरि' है। कलियुग प्रत्यक्ष दैव श्री वेंकटेश्वर भगवानजी के वैभव एवं तिरुमल क्षेत्र की महानता को हर महीने 'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका पाठकों को आलेखों के माध्यम से पहुँचाता है। छः भाषाओं में मुद्रित यह पत्रिका आध्यात्मिक, धार्मिक पत्रिकाओं में विशिष्ट स्थान पायी है। यह पत्रिका जिज्ञासुओं, महिलाओं व बच्चों... जैसे सभी उम्रवालों के लिए उपयुक्त बनी है। कालप्रवाह में अभिवृद्धि की ओर कदम रखते हुए पाठकों से विशेष प्रशंसा पाते हुए सप्तगिरि ५०वीं वर्षगांठ में प्रविष्ट हो रही है। इस शुभ अवसर पर 'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका के पाठकों से विनती है कि ''सप्तगिरि पत्रिका को पढ़ने के बाद की अनुभूतियाँ व अनुभव एक लेख के रूप में हमारे कार्यालय में भेजें। उनका परिशीलन करके 'सप्तगिरि' में प्रकाशित किया जाएगा।

आपका लेख अगर डाक से भेजना हो, तो - 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे. प्रेस कांपौंड, के.टी.रोड, तिरुपति-५१७ ५०७' के पते पर भेजने का कष्ट करें।

हिन्दी में डी.टी.पी. करके मेइल से भेजने के लिए- पेज मेकर अनु-फांट्स में या एम.एस.वर्ड में युनिकोड फांट में भी टैप करके फैल के साथ पी.डी.एफ. फैल भी hindisapthagiri50years@gmail.com मेइल आई.डी. के द्वारा भेज दें।

श्री रामानुजाचार्यजी एवं प्रधान शिष्य श्री कूरेशाचार्यजी

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया

आज हम यहाँ श्री संप्रदाय के आद्य प्रवर्तक श्रीरामानुजाचार्यजी और उनके प्रधान शिष्य श्री कूरेशाचार्यजी के घनिष्ठ संबंध के बारे में अनुसंधान करने जा रहे है। सहस्त्र मुखवाले शेष भगवान के अवतार श्रीरामानुजाचार्यजी ने भक्तिपंथ का उपदेश देकर संसार के उद्धार का महान प्रयत्न किया। गुरुदेव ने मन्त्र देकर जिसे गुप्त रखने के लिये कहा था, उसे श्रीरामानुजाचार्यजी ने मन्दिर-द्वार के सबसे ऊँचे भागपर चढ़कर ऊँचे स्वर से उच्चारण किया, ताकि सभी लोग श्रवण कर सकें। मन्त्रध्वनि को सुनकर सोचे हुए लोग जग पड़े और बहतर भक्तों ने उसे सुनकर हृदय में धारण कर लिया। इसलिए अलग-अलग बहत्तर पद्धतियाँ हुई। इनके शिष्यों में कूरत्ताल्वान्‌जी प्रधान थे, जो जीवों का मंगल करनेवाले और भक्ति के मूर्तिमान स्वरूप थे। दीन एवं शरणागति का पालन करनेवाले करुणा के समुद्र श्रीरामानुजाचार्य के समान दूसरा कोई नही हुआ।

श्रीरामानुजाचार्यजी एवं श्री कूरेशाचार्यजी से सम्बन्धित संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

श्रीरामानुजाचार्यजी

श्रीरामानुजाचार्य बड़े ही विद्वान, सदाचारी, धैर्यवान, सरल एवं उदार थे। ये आचार्य आलवन्दार (यामुनाचार्य) की परम्परा में थे। इनके पिता का नाम केशवभट्ट और माता का नाम कान्तिमती था। ये दक्षिणे तिरुक्कुरुगूर नामक क्षेत्र में रहते थे। जब इनकी अवस्था बहुत छोटी थी, तभी इनके पिता का देहान्त हो गया और इन्होंने कांची में जाकर यादवप्रकाश नामक गुरु से वेदाध्ययन किया। विद्या, चरित्रबल और भक्ति में रामानुजजी अद्वितीय थे, जिनके बल से इन्होंने कांचीनगरी की राजकुमारी को प्रेतबाधा से मुक्त कर दिया।

जब महात्मा आलवन्दार (यामुनाचार्य) मृत्यु की घड़ियाँ गिन रहे थे, उन्होंने अपने शिष्य के द्वारा रामानुजाचार्य को अपने पास बुलावा भेजा, परंतु रामानुजजी के श्रीरंगम् पहुँचने के पहले ही आलवन्दार भगवान नारायण के धाम में पहुँच चुके थे। रामानुजजी ने देखा कि श्री यामुनाचार्य के हाथ की तीन उँगलियाँ मुड़ी हुई हैं। इसका कारण कोई नहीं समझ सका। रामानुजजी तुरंत ताड़ गये कि यह संकेत मेरे लिये है। उन्होंने यह जान लिया कि श्री यामुनाचार्य मेरे द्वारा ब्रह्मसूत्र, विष्णुसहस्त्रनाम और आलवन्दारों के 'दिव्यप्रबन्धम्' की टीका करवाना चाहते हैं। उन्होंने आलवन्दार

के मृत शरीर को प्रणाम किया और कहा - 'भगवन्! मुझे आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, मैं इन तीनों ग्रन्थों की टीका अवश्य लिखूँगा। रामानुजजी के यह कहते ही आलवन्दार की तीनों उँगलियाँ सीधी हो गयी। इस के बाद श्री रामानुजजी ने आलवन्दार के प्रधान शिष्य पेरियनम्बि से विधि पूर्वक वैष्णव दीक्षा ली और वे भक्ति मार्ग में प्रवृत्त हो गये।

रामानुजजी गृहस्थ थे, परंतु जब उन्होंने देखा कि गृहस्थी में रहकर अपने उद्देश्य को पूरा करना कठिन है, तब उन्होंने गृहस्थ का परित्याग कर दिया और श्रीरंगम् जाकर यतिराज नामक सन्यासी से सन्यास की दीक्षा ले ली।

श्रीरामानुज ने तिरुक्कोष्टियूर नम्बि से अष्टाक्षर मन्त्र (ओं नमो नारायणाय) की दीक्षा ली थी। नम्बि ने मन्त्र देते समय इनसे कहा था कि 'तुम इस मंत्र को गुप्त रखना।' परंतु रामानुजजी ने सभी वर्ण के लोगों को एकत्रकर मंदिर के शिखर पर खड़े होकर सब लोगों को यह मंत्र सुना दिया। गुरु ने जब रामानुजजी की इस धृष्टता का हाल सुना। तब वे इन पर बड़े रुष्ट हुए और कहने लगे- 'तुम्हें इस अपराध के बदले नरक भोगना पड़ेगा।' श्रीरामानुज ने इस पर बड़े विनयपूर्वक कहा कि 'भगवान! यदि उस महामंत्र का उच्चारण करके हजारों आदमी नरक की यंत्रणा से बच सकते हैं तो मुझे नरक भोगने में आनन्द ही मिलेगा।' रामानुजजी के इस उत्तर से गुरु का क्रोध शांत रहा, उन्होंने बड़े प्रेम से इन्हें गले लगाया और आशीर्वाद दिया। इस प्रकार रामानुजजी ने अपने समदर्शिता और उदारता का परिचय दिया।

एक बार श्रीरामानुजाचार्यजी श्री जगन्नाथस्वामी का दर्शन करने जगन्नाथपुरी गये। वहाँ उन्होंने देखा कि पण्डे-पुजारी आचारभ्रष्ट हैं। इससे उन्हे बहुत दुःख हुआ। इस समस्या के समाधान के लिए वे वहाँ के राजा से मिले और उनका ध्यान पुजारियों की आचार हीनता की ओर आकृष्ट कराया। राजा की सहमति से उन्होंने सभी पण्डे-पुजारियों को हटाकर अपने एक हजार शिष्यों को भगवान श्री जगन्नाथस्वामी की सेवा-पूजा सौंप दी।

इधर पण्डे-पुजारी सेवा-पूजा से हटा दिये जाने के कारण वृत्ति हीन हो गये। वे बेचारे मंदिर के पीछे बैठकर रोने-बिलखने और महाप्रभु से क्षमा-प्रार्थना करने लगे। प्रभु तो परम करुणामय ही है, उनसे पण्डे पुजारियों का दुःख न देखा गया। उन्होंने स्वप्न में रामानुजाचार्यजी से कहा कि वे पण्डे-पुजारियों को सेवा पूजा करने दें। इस पर रामानुजाचार्य ने कहा कि वे मंदिर में वेद-विरुद्ध कार्य आचरण करते हैं, अतः मैं उन्हें मंदिर में प्रवेश ही नही करने दूँगा। भगवान ने कहा कि वे लोग जब मेरे सम्मुख ताली बजाकर नृत्य करते हैं, तो वह मुझे बहुत ही प्रिय लगता है, अतः मेरी सेवा-पूजा का कार्य तुम उन्हें ही दे दो। परंतु रामानुजजी उन पण्डों को किसी भी शर्त पर सेवा-पूजा का कार्य नही सौंपना चाहते थे। करुणामय भगवान को अपने भक्त रामानुजजी का हठ भी रखना था और अपने दीन सेवकों पर भी करुणा करनी थी। अतः

उन्होंने गरुडजी को आज्ञा दी कि रामानुजजी को शिष्यों समेत श्रीरंगनाथधाम पहुँचा दो। गरुडजी ने प्रभु के आज्ञानुसार रामानुजाचार्यजी को शिष्यों सहित रात में सोते समय श्रीजगन्नाथधाम से श्रीरंगनाथधाम पहुँचा दिया। प्रातः जगने पर इस आश्चर्यमयी घटना को देख रामानुजजी प्रभु को भक्तवत्सल का अनुभव कर गद्‌गद् हो गये।

श्रीरामानुज ने आल्वारों के भक्तिमार्ग का प्रचार करने के लिए सारे भारत की यात्रा की और गीता तथा ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखे। वेदान्तसूत्रों पर इनका भाष्य 'श्रीभाष्य' के नाम से प्रसिद्ध है और इनका सम्प्रदाय भी 'श्री सम्प्रदाय' कहलाता है, क्योंकि इस संप्रदाय को आद्यप्रवर्तिका श्री महालक्ष्मीजी मानी जाती है। इनके प्रधान शिष्य का नाम कूरत्ताल्वान्(कूरेश) था। कूरत्ताल्वान् के पराशर और पिल्लन नाम के दो पुत्र थे। रामानुजजी ने पराशर के द्वारा 'विष्णुसहस्त्रनाम' की और पिल्लन से 'दिव्यप्रबन्धम्' की टीका लिखवायी। इस प्रकार उन्होंने आलवन्दार (यामुनाचार्य) की तीनों इच्छाओं को पूर्ण किया।

श्री कूरेशाचार्यजी

श्री कूरेशजी लक्ष्मी एवं सरस्वती के वरदपुत्र थे। श्रीमद् रामानुजाचार्य के शिष्यों में श्री कूरेशजी का अत्यन्त विशिष्ट स्थान है। कांचीपुर से दो कोस दूर कूरपुर नामक एक राज्य था, कूरेशजी वहाँ के राजा थे। सन्तों वैष्णवों की सेवा, दीनों में दीनदयाल का दर्शन करना और अन्न-वस्त्र से उनकी सेवा करना उनका जीवन-सिद्धान्त था। उनके राजद्वार पर प्रातःकाल से अर्धरात्रि तक याचकों को अन्न-वस्त्र वितरित होता और फाटक बन्द होने से पूर्व घण्टा-ध्वनि करके यह कहा जाता है कि जो लोग अन्न-वस्त्र न प्राप्त कर सके हों, वे आकर प्राप्त कर लें।

कहते है कि घण्टा-ध्वनि जब एक दिन कांचीपुर में सुनायी घड़ी तो माता लक्ष्मी ने वरदाराज भगवान से उस ध्वनि के विषय में पूछा, इस पर भगवान वरदराज ने माता लक्ष्मी को कूरेशजी को दान-गाथा सुनायी। माता लक्ष्मी को कूरेशजी के कार्य से बड़ी प्रसन्नता हुई, उन्होंने प्रभु से ऐसे भक्त के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। भगवान वरदराज ने अपने पूजारी श्री कांचीपूर्णजी को कूरेशजी को बुला लाने की आज्ञा दी।

भगवान वरदराज की आज्ञा और माता लक्ष्मी की इच्छा सुनकर कूरेशजी आनन्दमग्न हो गये, उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि यह हम लोगों का धन्यता है कि माता लक्ष्मी ने हमें याद किया है, परंतु यह शरीर तो अत्यन्त पतित है, अतः इसे पावन करने के लिये हमें सबसे पहले भगवान रामानुजाचार्यजी से दीक्षा लेनी चाहिये। यह निश्चय कर वे सपत्नीक आचार्य श्री रामानुजजी के दर्शन के लिये श्रीरंगम् चल दिये। उन्होंने अपनी सम्पत्ति का दान कर दिया और अकिंचन होकर आचार्य रामानुजजी की शरण में गये, श्रीरामानुजजी ने इन्हें नारायण-मंत्र की दीक्षा दी और वही रहने की व्यवस्था कर दी। आचार्य श्रीरामानुजजी ने ब्रह्मसूत्र पर श्रीभाष्य लिखा है। उनके इस भाष्य लेखन में श्री कूरेशजी की अद्भुत मेधाशक्ति की दिग्दर्शना होती है।

ऐसे ही रामानुजाचार्य और प्रधानशिष्य श्री कूरेशजी के बीच अत्यंत घनिष्ठ संबंध था।

जय श्रीमन्नारायण

'मानव सेवा ही... माधव सेवा'

आर्ष धर्म में बताया गया है।
सह प्राणियों को किसी भी तरह रक्षा की
जाय, तो अनंत पुण्यफल हमें और हमारे परिवार
को मिलेगा। कलियुग वैकुण्ठ के भगवान का
आवास स्थान तिरुमल में रक्तदान
करना परम पवित्र कार्य है।
आपके रक्त से अन्य व्यक्ति का प्राण बचता है।

तिरुमल में रक्तदान कीजिए।

तिरुमल अश्विनी अस्पताल में प्रतिदिन सुबह 8
बजे से लेकर दोपहर 12 बजे के अंदर
कोई भी रक्तदान कर सकता है।

दूरभाष - 0877-2263601

आइये... रक्तदान कीजिए!
संकटग्रस्त व्यक्ति को सहायता कीजिए!!

भगवद्गीता और नौजवान

भगवद्गीता का व्यावहारिक ज्ञान

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास
हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास

सैद्धांतिक ज्ञान एवं व्यावहारिक ज्ञान, ज्ञान प्राप्ति की दो विधियाँ हैं। सैद्धांतिक ज्ञान किसी विषय को समझने या उसकी जानकारी प्राप्त करने में सहायक होता है। व्यावहारिक ज्ञान द्वारा उस समझ या जानकारी का प्रयोग वास्तविक जीवन में किया जा सकता है। ज्ञान के इस व्यावहारिक पहलू को भगवद्गीता में ''सविज्ञानम्'' कहकर सम्बोधित किया गया है। गीता के संदेश का आराम कुर्सी पर बैठकर की जाने वाली दार्शनिकता पूर्ण बातों या सैद्धांतिक ज्ञान की प्राप्ति से कोई अभिप्राय नहीं है। वास्तव में भगवद्गीता को अत्यन्त कठिन परिस्थिति के समय सुनाया गया था। यही नहीं इसे एक सबसे ज्यादा उलझे हुए ऐसे व्यक्ति को सुनाया गया था जिसने विजय एवं विजय से संबन्धित समस्त सुखों को अस्वीकार कर दिया था। सभी व्यक्ति जीवन के हर कार्य में सफल होने की इच्छा रखते हैं। कोई भी असफलता के सपने नहीं देखता है। संपूर्ण जगत में केवल अर्जुन ही एक ऐसे व्यक्ति थे जो विजय को नहीं पाना चाहते थे। लेकिन गीता ने ऐसे व्यक्ति को भी विजय प्रदान करके अपनी निश्चित रूप से विजय प्रदान करने के आश्वासन की महिमा को प्रदर्शित किया। यह भगवद्गीता से व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होने का प्रमाण है। गीता का ज्ञान कार्यों से बचकर भागने या अकर्म का उपदेश कभी नहीं देता है अपितु यह विषम परिस्थितियों को पार करके सदैव विजय की ओर अग्रसर होने का प्रशिक्षण देता है। इसी कारण गीता के ज्ञान को व्यावहारिक ज्ञान कहा जाता है।

इसे विस्तार में समझाने के लिए भगवान ने सभी के लिए कुछ कार्यों का निर्देश दिया है। सब लोग प्रतिदिन अनेकों कार्य करते हैं। वे अत्यावश्यक हैं जैसे खाना, सोना, मनोरंजन एवं परिश्रम आदि। यदि यह सभी कार्य भगवद्गीता के अनुसार किये जायें तो उनमें सफलता निश्चित है। लेकिन उन्हीं कार्यों को अपनी सोच या सनक के अनुसार करने पर असफलता की प्राप्ति अटल है। भगवान श्रीकृष्ण ने इस बात को स्पष्ट करते हुए कहा ''हे अर्जुन! जो अधिक खाता है या बहुत कम खाता है, जो अधिक सोता है अथवा जो पर्याप्त नहीं सोता है उसके योगी बनने की कोई संभावना नहीं है।'' (भगवद्गीता, अध्याय-६, श्लोक १६) इन कार्यों का असंतुलित होना ही निश्चित रूप से किसी व्यक्ति को मिलनेवाली लगातार असफलता या उसके समस्याओं में घिरे रहने का कारण है। भगवान ने केवल समस्या ही नहीं बताई अपितु उसका सर्वोच्च हल भी दिया, जो इतना उपयोगी है कि उसका अभ्यास एवं अनुसरण करनेवाले व्यक्ति को निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है और वह प्रसन्नता का आनंद लेता है।

''जो खाने, सोने, आमोद-प्रमोद तथा काम करने की आदतों में नियमित रहता है, वह योगाभ्यास द्वारा समस्त भौतिक क्लेशों को नष्ट कर सकता है।'' (भगवद्गीता, अध्याय-६, श्लोक-१७) अर्थात्

भगवद्गीता से प्राप्त इस हल का अभ्यास करने वाले व्यक्ति को निश्चित रूप से पूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन, तीव्र बुद्धि एवं प्रबल आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति होती है। वास्तव में यही सच्चा योग है। विद्यार्थियों की अपने जीवन के हर क्षेत्र में विजय प्राप्त करने के लिए गीता के इस संदेश का पूरी सतर्कता के साथ अभ्यास करना चाहिए। अतः गीता का कोई भी उपदेश अव्यावहारिक नहीं है और उसमें कहीं पर भी किसी अप्रायोगिक विषय का वर्णन नहीं है। भगवद्गीता में उचित भोजन करने, अच्छा मनोरंजन करने, उचित प्रकार से सोने तथा ध्यान पूर्वक परिश्रम करने का निर्देश दिया गया है। प्रसन्नता पूर्वक जीने की इतनी स्पष्ट विधि भगवद्गीता के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रंथ से नहीं प्राप्त होती है। यहाँ तक कि हमारे सर्व प्रिय माता-पिता से प्राप्त उपलब्धियाँ भी अतुलनीय गीता लाभ के तुल्य नहीं हैं।

विद्यार्थियों एवं युवाओं के लिए शाकाहारी भोजन बहुत अच्छा एवं अत्यंत लाभकारी है। हमें स्वाधीनता दिलाने के लिए लड़ने वाले महात्मा गाँधी एक शुद्ध शाकाहारी थे। जाने-माने वैज्ञानिक एवं भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ.अब्दुल कलाम शाकाहारी थे। विश्व-विख्यात वैज्ञानिक सर आइज़क न्यूटन भी शाकाहारी थे। अतः शाकाहारी भोजन युवाओं एवं विद्यार्थियों के लिए निश्चित रूप से लाभदायक है। मनोरंजन चित्त को प्रसन्न करके आनंदित रखता है। अतः सभी विद्यार्थियों को प्रतिदिन मनोरंजन के लिए कम से कम ३० मिनट तक प्रातःकाल में टहलना, खेल-कूद या प्रेरणात्मक साहित्य का अध्ययन आदि करना चाहिए। निद्रा के महत्व को समझना आवश्यक है। पर्याप्त विश्राम शरीर, मन एवं मस्तिष्क को ऊर्जा प्रदान करता है। पर्याप्त विश्राम करने के पश्चात् यह सभी नई ऊर्जा से पूर्णतया क्रियाशील हो जाते हैं। चिंतनपूर्ण परिश्रम करने के लिए बुद्धि को तीव्र बनाना आवश्यक है। अनुभवी वरिष्ठ व्यक्तियों की सलाह अत्यंत लाभप्रद होती है। यदि कोई व्यवस्थित रूप से उचित एवं अनुचित कार्यों की जानकारी प्राप्त कर लेता है तो वह जीवन में सदैव सफलता की ओर अग्रसर होता है। तब जीवन पूर्णतया आनंदमय हो जाता है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक ध्रुवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

२०१९, अप्रैल १७ से १९ तक तिरुमल में संपन्न श्रीहरि, श्री कोदंडरामस्वामी तथा श्रीकृष्णस्वामी जी का वसंतोत्सव

उभयदेवेरियों के संग श्रीहरि का सहस्रधाराभिषेक

दोनों देवेरियों के संग श्रीहरि को, श्री सीतालक्ष्मण समेत कोदंडरामस्वामी को, श्री रुक्मिणी-कृष्णस्वामी को समर्पित स्नपन तिरुमंजनम् का दृश्य

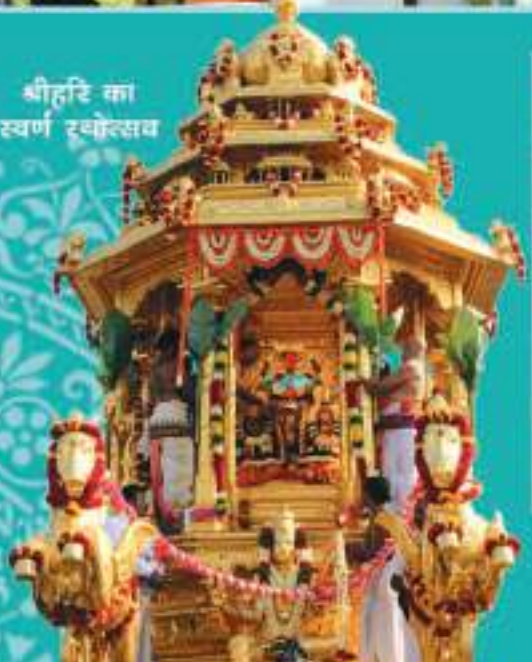

श्रीहरि का स्वर्ण रथोत्सव

तिरुमल की पुरवीथियों में श्रीहरि के संग उभयदेवियाँ, श्री सीतालक्ष्मण समेत कोदंडरामस्वामी तथा श्री रुक्मिणी-कृष्णस्वामी

२०१९, अप्रैल १२ से २१ तक ओंटिमिट्टा श्री कोदंडरामस्वामी के ब्रह्मोत्सव अत्यंत वैभव के साथ संपन्न हुए।

ध्वजारोहण

हनुमद्वाहन

पुरवीथियों में श्रीरामचंद्रमूर्ति की शोभायात्रा

श्री सीतारामलक्ष्मण को समर्पित ऊँजल सेवा

गरुडवाहन

नवनीत से अलंकृत श्रीकृष्ण

श्री कोदंडरामस्वामी का मंदिर
ओंटिमिट्टा

अप्रैल १८, २०१९ को ऑटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी का कल्याणोत्सव अत्यंत वैभव के साथ संपन्न हुआ, उसके दृश्य प्रस्तुत हैं।

श्री सीता-राम की मूर्तियाँ

श्री सीता-राम का कल्याण महोत्सव

श्री सीता-राम के कल्याणोत्सव के संदर्भ में आंध्रप्रदेश सरकार की ओर से आंध्रा तथा तेलंगाना राज्यों के राज्यपाल श्री ई.एस.एल.नरसिंहन दम्पति तथा पत्नी समेत मुख्यमंत्री श्री नारा चन्द्रबाबुनायुडु

श्री सीता-राम के कल्याणोत्सव में भाग लेनेवाले भक्तगण

विद्युत दीपों से सुअलंकृत ऑटिमिट्टा के श्री कोदंडरामस्वामी का मंदिर

तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामी का कल्याणोत्सव व पट्टाभिषेक २०१९, अप्रैल १५,१६ को अत्यंत वैभव के साथ संपन्न हुए। उसके दृश्य प्रस्तुत हैं।

श्री सीता-राम का कल्याण महोत्सव

श्री सीता-राम का पट्टाभिषेक

श्री सीता-राम कल्याणोत्सव के लिए ति.ति.दे. की ओर से तिरुमला के संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री के.एस. श्रीनिवासराजु, आई.ए.एस. के द्वारा मंगलसूत्र एवं नूतन वस्त्र समर्पण

श्री सीता-राम के पट्टाभिषेक के लिए ति.ति.दे. की ओर से तिरुपति के संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री बी. लक्ष्मीकांतम्, आई.ए.एस. के द्वारा स्वर्ण मुकुट समर्पण

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(पंचम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि तापडिया

८६

श्रीमते रामानुजाय नमः

अदृष्टगुण दोषाणामधृतानां च कर्मणाम्।
अन्तरेणक्रियां तेषां फलमिष्टं प्रवर्त्तते।।

इसका अर्थ यह भया कि जब कोई किसी प्रकार का दुःख भोगता है, किसी पर साधारण या भयंकर जब भी आफत आ पड़ती है, वह उसके पूर्व कर्मों का ही फल है परन्तु कब के किये हुए और कौन से बुरे कर्मों का यह दुःख रूप फल उदय भया है इस बात को सिवाय परमात्मा के यह चेतन नहीं जान सकता है। इस प्रारब्ध भोग से शरीरधारी कोई बच नहीं सकता है। इन्द्रादिक देवों को भी प्रारब्ध भोग नहीं छोड़ा है। श्री लक्ष्मण जी के वचन हैं कि कई बार इन्द्र के ऊपर भी आफत आई, और बड़े-बड़े देवता भी बड़े-बड़े मुनि लोग भी इस प्रारब्ध भोग के चक्र से नहीं बचते हैं जैसे श्लोक है -

महर्षियों वशिष्ठस्तु यः पितुर्नः पुरोहितः।
अह्नापुत्र शतं जज्ञे तथैवास्य पुनर्हतम्।।

इसका अर्थ यह भया कि महर्षि वशिष्ठजी को एक सौ पुत्र थे। परन्तु उनके प्रारब्ध वश वे सब एक ही दिन में मर गये। कहने का सारांश यह भया कि यह प्रारब्ध भोग की विभूति है। जो इसमें आया वह प्रारब्ध भोग से नहीं बचा। इससे सच्चे मुमुक्षुओं को चाहिए कि चाहे जैसा भी प्रारब्ध भोग आ पड़े उनमें बिलकुल घबड़ावे नहीं, उसको खूब धीरता-पूर्वक भोग लेवें। चाहे अपने को भयंकर से भयंकर असह्य तकलीफ आ जावे, अपने शरीर सम्बन्धियों को रोग आदि का कष्ट आ जावे, या एक ही रोज में सबके मरण का मौका आ जावे, एक रोज में जन्म भर की कमाई, सम्पत्ति अनेक प्रयत्न करने पर भी चली जावे या बुरी हालत से कोई अपना अपमान कर देवे, ऐसे समय पर भी सच्चे मुमुक्षुओं को न घबड़ाना चाहिए, न धैर्य छोड़ना चाहिए, न प्राण देने की चेष्टा करनी चाहिये, न किसी पर दोषारोपण करना चाहिए, न अत्यंत शोक के परवश होना चाहिए, न किसी प्रकार की मनौती करनी चाहिए, न किसी प्रकार का अनुष्ठान बैठाना चाहिये, न उन दुःखों को छुड़ाने के लिए अपने प्यारे परमात्मा से भूल कर भी किसी प्रकार की प्रार्थना करनी चाहिए। अपने मन में यह पक्का समझे कि जब समय आने पर इतने बड़े श्रीरामजी के पुरोहित श्री वशिष्ठजी के एक ही रोज में एक सौ जवान पुत्र मर गये, फिर दूसरे की क्या कथा है। आयुष्य पूजा जाने पर इतने बड़े भक्त श्री अर्जुनजी के प्यारे पुत्र अभिमन्यु भी मृत्यु से नहीं बच सके तो दूसरा कौन बच सकता है। प्रारब्धानुसार परमात्मा का अत्यन्त प्यारे महात्मा श्री विदुरजी को भी दरिद्रता दुःख भोगना पड़ा। फिर प्रारब्ध विपरीत होने पर उनसे बढ़ कर और कौन है जो बच सकता है। भगवान के वहाँ उस काल में विराजते भी ऐसे परम प्यारे भक्त का सभा में दुर्योधन के द्वारा बुरी हालत से अपमान होना यह कैसी बात है। परन्तु वह महान् मुमुक्षु परमज्ञानी श्री विदुरजी उन विपत्तियों को विपत्ति माने ही नहीं, न उससे कभी घबड़ाये, न अपमान करने वालों का बुरा ही

चिन्तन किया, न उन दुःखों से छुड़ाने के लिए कभी अपने प्यारे परमात्मा से प्रार्थना ही किये, न भगवान में से जरा भी श्रद्धा प्रेम हटाये और उल्टा पहले की अपेक्षा परमात्मा में सौगुना प्रेम बढ़ाकर रहते थे। मनुष्य जीवन का प्रधान धन प्रधान फल भगवान का श्री चरण है। उन्हीं के स्मरण में अपना अमूल्य समय एकान्त में रह रहकर बिताते थे और भगवान के श्री चरणों के दर्शन की बार-बार उत्कण्ठा बढ़ाते थे जैसे बड़ों का वचन है कि -

धनं मदीयं तव पाद पंकजं कदानुसाक्षात्कारवाणि चक्षुषा।

इसका भाव यह भया कि परमाचार्यजी भगवान से प्रार्थना करते हैं कि मेरे धन तो आपके श्री चरण कमल हैं। इन नेत्रों से उस दिव्य धन का कब साक्षात् होवे यही निरन्तर अभिलाषा लग रही है। स्वरूप ज्ञानी सच्चे मुमुक्षुओं का यही आचरण है। महात्माओं! आप लोग जानते ही हैं कि सर्व समर्थ परमात्मा पीपल के नीचे साक्षात् विराजे हुए थे और कुटुम्ब कहानेवाले यादव प्रभास में परस्पर में लड़ लड़कर मर गये। परन्तु उस समय भगवान उन्हें न बचाये न बचाने का प्रयत्न ही किये। क्योंकि जिसका आदि है उसका अन्त भी है। जब उन लोगों का बिल्कुल अन्त का ही समय आ गया तो एक ही दिन में उन करोड़ों को मरना पड़ा। यह प्रारब्ध भोग की विभूति है। जब कि भगवान के कुटुम्ब कहानेवाले एक ही दिन में समय आने पर मर गये और साक्षात् भगवान वहाँ विराजे ही थे परन्तु उस अंश में जो होना था वही हुआ। कहिए महात्माओं! इस बात को जानता हुआ कोई समझदार मुमुक्षु एक ही रोज में दस पांच कुटुम्बियों के मर जाने पर किस प्रकार धीरता को छोड़ सकेगा या कैसे आश्चर्य मानेगा या किस प्रकार परमात्मा को दोष दे सकेगा। जो गर्भ के सच्चे मित्र उस प्यारे परमात्मा से किस प्रकार से श्रद्धा-भक्ति हटा सकेगा या परमात्मा से उदासीन हो सकेगा। ये जितनी अनित्य चीजों का जुटान भया है सो बीच में ही भया है और बीच में ही छूट जाने वाला है। न तो ये सब हमारे साथ गर्भ में थे, न मरने के बाद कोई भी साथ में चलने वाले हैं। बारम्बार शास्त्र समझा-समझाकर कहता है कि ये सब क्षणिक है, अनित्य हैं, नाशवान हैं, परवश हैं। हम लोगों के प्रारब्धानुसार भगवान के संकल्प मुजब सब एकत्र भये हैं। जितने दिन तक इनका संयोग परमात्मा ने संकल्प कर रखा है उतने ही दिन रहने वाला है।

इन नाशवान चीजों के लिए सच्चा मुमुक्षु परमात्मा का नियम जानता हुआ कैसे प्रार्थना कर सकेगा। अथवा कभी न कभी नाश हो जाने वाले सम्बन्धियों के वियोग हो जाने पर परमात्मा से या गुरु चरणों से या परमात्मा के प्रिय आश्रितों से कैसे श्रद्धा प्रेम हटा सकेगा। महात्माओं! मुमुक्षु कहाना सहज बात नहीं है। महात्मा भागवत वैष्णव वही है जो सर्वदा एक स्थिति से रहे। अचानक भयंकर विपत्ति आ जाय ऐसे मौके पर भी अपने नित्य बन्धु प्राणधन, गर्भ के मित्र प्यारे परमात्मा में पूर्ववत् प्रेम निष्ठा बनी रहे। गुरु चरणों में पहले ही के समान भाव जमा रहे। परमात्मा के प्यारे भागवतों से जरा भी निष्ठा नहीं डिगे। उस चेतन को सच्चा मुमुक्षु महात्मा, निष्ठावान तथा भागवत वैष्णव और सच्चा परमात्मा का आश्रित कह सकते हैं। वही आस्तिक ज्ञानियों की गोष्ठी में गिना जाता है ऐसे ही लोग परमधाम में परमात्मा की कौस्तुभ मणि के समान कण्ठ के भूषण बनते हैं और ऐसे महापुरुषों के श्री चरण के संस्पर्श पाकर यह पृथ्वी थमी रहती है। गीता में ऐसे ही महात्मा को भगवान ने अपना आत्मा माना है। ज्ञानी का उपमा दिया है। भगवान अर्जुन जी से कहते हैं कि हे अर्जुन! चार प्रकार के अधिकारी हमारा भजन करते हैं। एक का नाम आर्त्त है दूसरा जिज्ञासु है तीसरा अर्थार्थी तथा चौथे का नाम ज्ञानी है। इन चारों में तीन तो उदार हैं। याने सकाम भाव वाले हैं और जो ज्ञानी हैं वह मेरा आत्मा है।

(क्रमशः)

(गतांक से)

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित | प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

अडल् कोण्ड नेमियन् आरुयिर् नाथन्, अन्नारण च्चोल्
कडल् कोण्ड वोण्पोरुळ् कण्डलिप्प, पिन्नुम् काशिनियोर्
इडरिन्कण् वीळ्न्दिड त्तानु मव्वोण् पोरुळ्कोण्डु अवर्पिन्
पडरुङ्गुणन्, एम्मिरामानुजन्तन् पडियिदुवे॥३६॥

आश्रितविरोधिनिरसनशीलहेतिराजाञ्चितपाणितलस्सर्वेश्वरः पुरापार्थसारथिस्सन् वेदपारावारनिगूढान् परमार्थान् गीतामुखेन प्रादुरभावयत्। अथापि संसारिचेतनान् भवाम्बुधावेव निमग्नान्निरीक्ष्य दयमानमना भगवान् रामानुजस्तानेव महार्थान् स्वयमुपाददानः तदुद्धरणाय प्रावर्तत। अस्मदाचार्यवर्यस्यास्य विलक्षणो ह्ययं कृपाप्रकारः।

भक्तजनविरोधियों का निरसन करने में समर्थ चक्रराज से अलंकृत पाणितलवाले समस्त चेतनों के ईश्वर भगवान ने पहले एक समय जब कि वे अर्जुन के सारथि बने थे, वेदसागर में निगूढ श्रेष्ठ अर्थों का विवेचन कर गीताजी के द्वारा उनको प्रकाशित किया; उसके बाद भी इस भूतलवासी जन संसार सागर में ही मग्न रहे। यह देखकर दयाविष्ट श्रीरामानुजस्वामीजी स्वयं उस गीता के श्रेष्ठ अर्थ लेकर उन संसारियों के पीछे पडने लगे। यह है हमारे आचार्य सार्वभौम की कृपा का प्रकार। (विवरण- भगवान ने समस्त संसारियों के उद्धार के लिए रहस्यमय वेदार्थ चुनकर गीताशास्त्र बनाकर उसका उपदेश किया; परंतु उसका अध्ययन कर किसी ने सद्गति नहीं पायी; सभी जन ज्यों के त्यों संसार में ही मग्न रह गये। यह देखकर दयाविष्ट श्रीरामानुजस्वामीजी ने उसी गीता के अर्थों का स्वयं अपनी सुंदर वाणी से उपदेश देते हुए सबका उद्धार किया। अहो आपकी कृपा भगवत्कृपा से भी विलक्षण है।)

यह देखकर दयाविष्ट श्रीरामानुजस्वामीजी ने उसी गीता के अर्थों का स्वयं अपनी सुंदर वाणी से उपदेश देते हुए सबका उद्धार किया। अहो आपकी कृपा भगवत्कृपा से भी विलक्षण है।

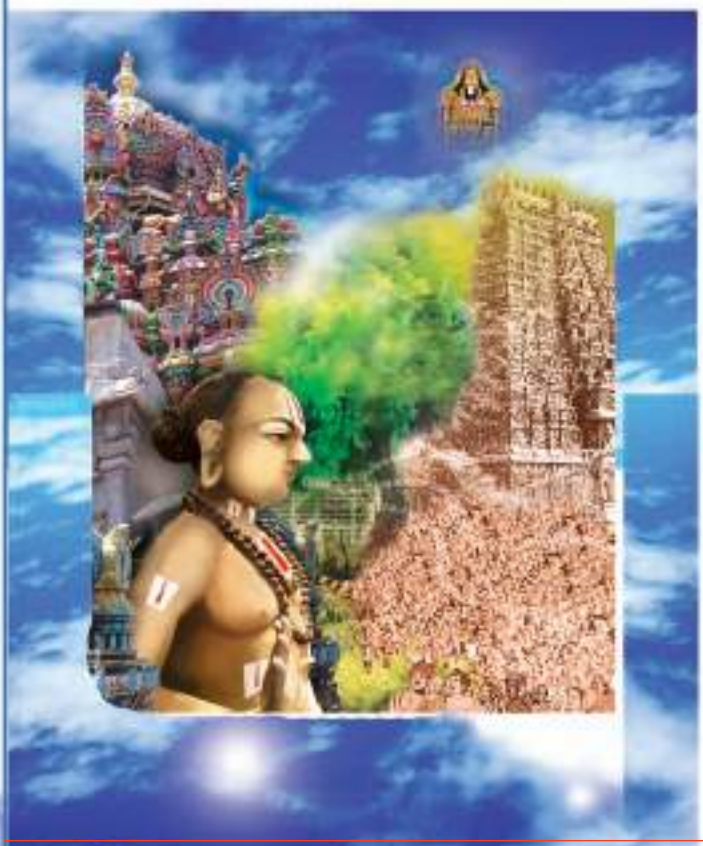

(क्रमशः)

भक्त ध्रुव चारित्रिक विशिष्टता

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवांघ्रि सेवक दास

हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी

स्वायंभू मनु देवदेव के अंशज ब्रह्म के पुत्र हैं। स्वायंभू तथा शतरुप की दो संतान हुई - पहला पुत्र प्रियव्रत है और दूसरा पुत्र उत्तानपाद है। उत्तानपाद भले ही अनुज हों, लेकिन उनका प्रस्ताव भागवत में सबसे पहले आता है मैत्रेय एवं विदुर के संवाद में। इनके बारे में चर्चा करने का मूलभूत कारण भक्त ध्रवु ही हैं। ध्रुव को भगवान का साक्षात्कार मिला था। उनकी विशुद्ध भक्ति पाठकों एवं श्रोताओं में भक्ति भाव को उद्दीप्त करती है तथा मनोल्लास प्रदान करती है।

उत्तानपाद की दो पत्नियाँ थीं - पहली पत्नी सुनीति थी तथा दूसरी पत्नी सुरुचि थी। दोनों की एक-एक संतान थीं। सुनीति का पुत्र ध्रुव था और सुरुचि का पुत्र उत्तम था।

एक बार, उत्तानपाद की गोद में उत्तम बैठा हुआ था। उसे देखकर सहज-स्वाभाविक प्रवृत्ति से ध्रुव ने भी अपने पिताजी की गोद में बैठना चाहा। उसका बैठना उत्तम को पसंद नहीं था। इसके बावजूद ध्रुव ने पिता की गोद में बैठने का प्रयास किया। सुरुचि ने तब बड़े कड़वे वचन सुनाये यथा - 'हे बालक! तुम राजा की गोद में या उनके सिंहासन पर बैठने लायक नहीं हो क्योंकि तुमने मेरे गर्भ से जन्म नहीं लिया। अगर तुम अपनी पिता की गोद में बैठना चाहते हो तो नारायण को प्रसन्न करने के लिए तपस्या करो। तुम्हें श्रीहरि की कृपा प्राप्त करके मेरे गर्भ से जन्म लेना होगा।'

सौतेली माँ के वचनों ने ध्रुव के हृदय को घायल किया। क्षत्रिय होने के कारण उम्र में छोटा ही सही, ध्रुव, अपमान को सह नहीं पाया। पिताजी ने भी सुरुचि के बातों का विरोध नहीं किया। इसलिए ध्रुव और भी कुपित हुआ तथा रोते-रोते अपनी माँ के पास गया। उतावला चेहरे के साथ आये अपने पुत्र को सुनीति ने गोदी में प्रेमपूर्वक बिठाया। अंतःपुर के परिजनों ने सुनीति को सारे किस्से सुनाये। विरोध करने का विचार सुनीति को नहीं सूझा। मनमुटाव से पीडित होने के बावजूद सुनीति ने अपने पुत्र का ठीक मार्ग दर्शन करने का दायित्व लिया। उसने पुत्र से ऐसा कहा - 'हे वत्स! कभी किसी का अमंगल होने की सोच मत रखो। जो दुःख देते हैं, वे उल्टे दुःख के शिकार होंगे। तुम्हारी सौतेली माँ ने ठीक ही कहा। तुम्हारे पिताजी मुझे अपनी रानी नहीं मानते, कम-से-कम वे मुझे उनकी दासी भी नहीं मानते। आपकी सौतेली माँ ने वास्तविक बात कही है। मुझ जैसी अभागिन के गर्भ से तुम्हें जन्म लेना नहीं था। सुरुचि ने वास्तविक बात कही है। अगर तुमको उत्तम जैसे राजसिंहासन पर बैठने की इच्छा हो तो सौतेली माँ के

वचनों का पालन करो। भगवान के पादपद्मों की सेवा में विलीन हो जाओ। भगवान के पादपद्मों की सेवा करके तुम्हारे पितामह ब्रह्म ने विश्वरचना करने योग्यता पाई। तुम्हारे दादा स्वयंभू मनु ने याग-यज्ञों को कर भगवान को प्रसन्न किया तथा इह-पर लोक में सुख पाई। हे पुत्र! जो भी जन्म-मृत्यु के जाल से बाहर निकलना चाहता हो, वह भगवान के पादपद्मों में ही शरण लेता है। तुम भी पद्माक्ष के चरण कमलों में शरण लो। एक ओर लक्ष्मी देवी को प्रसन्न करने के लिए ब्रह्मादि देवता यत्न करते रहते हैं, तो लक्ष्मी देवी देवदेव की सेवा में निरंतर लगी रहती है।'

सुनीति ने अपने बेटे को अच्छी सलाह दी। जो माँ अपने पुत्र को भक्ति का मार्ग दिखाती है, वही सच्ची माँ कहलाती है। क्रोध के मारे आगबबूला होने वाले ध्रुव को माँ के भक्ति संबंधी वचन शांत करती हैं। वास्तव में भगवान का जो शरण लेता है, उसे करोड़ों माताओं का वात्सल्य प्राप्त होता है।

माँ से सन्मार्ग का दिशा निर्देश लेकर, ध्रुव जंगल की ओर बढ़ा। इस विषय की जानकारी प्राप्त कर नारद महामुनि चकित हो जाते हैं। मार्ग मध्य में ध्रुव के सामने आकर बच्चे को साधुवाद देकर ऐसा कहा - 'हे वत्स! तुम बहुत छोटे हो। तुम्हारी उम्र अभी खेलने का है। सौतेली माँ के वचनों से क्रुद्ध होकर ऐसा नहीं करते। बड़े होने के बाद योग मार्ग को अपनाकर तुम कुछ पा सकोगे, अभी मेरी बात मानो और घर वापस लौट जाओ।'

ध्रुव को मुनि के वचन मानने योग्य नहीं लगे। उसने नारद से ऐसा कहा- आप त्रिलोक संचारी हो, सभी जीवों के लिए जो योग्य बात होती है, उसका मुझे उपदेश दीजिए। मैं क्षत्रिय हूँ, इसलिए सौतेली माँ के वचनों को मैं सह नहीं सकता। जिसने जो स्थान आज तक नहीं पाया, वैसा स्थान मैं पाना चाहता हूँ।

नारद मुनि, ध्रुव के विनम्र वचनों से पिघल कर ऐसा कहा - 'हे वत्स! तुम जंगल में भगवान पर ध्यान रखो, तुम नित्यप्रति भगवान की पूजा करो तथा जल, फ़ल, तुलसीदल आदि उन्हें समर्पित करो। ऐसा भक्ति पूर्वक भगवान पर ध्यान लगाओगे तो तुम्हें भगवान का दर्शन मिलेगा।'

नारद के उपदेश से प्रसन्न होकर ध्रुव ने उनकी प्रदक्षिण की। नारद मुनि उत्तानपाद के पास जाकर सारी घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया। राजा बहुत खिन्न हो उठे। सोचने लगे कि जंगली जानवर कहीं उनके बेटे को नुकसान न पहुँचाये। नारद ने तब राजा को यह समझाया कि उसके पुत्र इतना स्तर प्राप्त करेगा जिसे किसी ने अभी तक पाया ही नहीं हो। उत्तानपाद निश्चल मन से अपने पुत्र के बारे में ही सोचने लगे।

ध्रुव, घने जंगल में जाकर उपदेशानुसार भगवान के ध्यान में निमग्न हो गया। पहले के एक महीने में उसने केवल फ़लों को तीन दिनों में एक बार खाने लगा। दूसरे महीने में छः दिनों में एक बार सूखे पत्तों व तृण का सेवन करने लगा। तीसरे महीने में नौदिनों में एक बार केवल पानी पीकर समाधि स्थिति में पहुँच गया। चौथे महीने में प्राणायाम के बल पर बारह दिनों में एक बार केवल वायु का सेवन कर भगवध्यान में निमग्न रहने लगा। पाँचवे महीने में ध्रुव ने वायु को बाँधकर, उच्छवास-निश्वास को नियंत्रित कर एक पैर पर खडे होकर परब्रह्म के ध्यान में लीन हो गया। उसने इंद्रियों पर काबू पाया और केवल भगवान को अपने ध्यान का केन्द्र बनाया। तदुपरांत उसने एक पैर पर नहीं बल्कि उसकी उंगली पर अपने को खड़ा रखा। तब पृथ्वी कंपित हुई। जैसे ही ध्रुव ने वायुबंधन किया, जैसे ही समस्त लोकपालकों का श्वास रुक गया। सभी दौडे-भागे श्रीहरि के पास पहुँचे तथा रक्षा करने के लिए प्रार्थना की।

भगवान ने यह जान लिया कि ध्रुव की तपस्या ही इसका कारण है। सभी को आश्वासन देकर श्रीहरि गरुडवाहनारूढ़ होकर ध्रुव के सामने प्रत्यक्ष हुए। तभी ध्रुव के हृदय में भगवान का जो रूप था, वह अदृश्य हो गया। ध्रुव ने विचलित मन से आँखें खोली। चक्षुओं के सामने भगवान को पाकर, ध्रुव ने साष्टांग प्रणाम प्रस्तुत किया। वह भगवान की स्तुति करनी चाही लेकिन मुँह से

एक शब्द भी निकल नहीं रहा था। तब श्रीहरि ने अपने शंख को ध्रुव के सिर से लगाया। भगवान प्रदत्त ज्ञान से ध्रुव, भगवान की स्तुति करने लगा तथा मन-ही-मन यह माना कि भगवान की स्तुति को छोड़कर मुझे अन्यचीज भी कहीं रही है।

ध्रुव की दीक्षा से प्रसन्न होकर भगवान ने उसे वर दिया - 'हे राजकुमार ध्रुव! मैं तुम्हें अद्वितीय एवं अनमोल वर प्रदान कर रहा हूँ। कल्पांत में प्रलय के बाद भी सकुशल रहने वाला ध्रुवलोक तुम्हें प्रदान कर रहा हूँ। समस्त ग्रह तथा नक्षत्र उसकी प्रदक्षिणा करते रहेंगे। अपने पिता के बाद तुम छत्तीसहजार वर्षों के लिए शासन करोगे। तुम्हारी इंद्रिय शक्ति कभी क्षीण नहीं होगी। तुम बूढे नहीं होगे। तुम्हारा भाई उत्तर एक बार जंगल में शिकार के लिए जाकर एक यज्ञ के हाथों मारा जाएगा। उसकी माँ अपने बेटे को ढूँढ़ती हुई जंगल में जाकर दावानल में फँसकर भस्म हो जाएगी। मैं यज्ञों का केन्द्र हूँ। तुम समस्त यज्ञ करके मेरी पूजा करते रहोगे। इह लोक के समस्त सुखों का भोग करके अंत में तुम मुझे ही पाओगे। समस्त लोक वासियों से पूजित ध्रुवलोक को प्राप्त करने के उपरांत तुम कभी भौतिक जगत में नहीं आओगे।' ऐसा वर प्रदान कर श्रीहरि गरुडवाहनारूढ़ होकर ध्रुव के आँखों से ओझल हो गये।

भौतिकजगत का विष्णुधाम ही ध्रुवधाम है। उसी में क्षीरसागर है, सुप्रसिद्ध श्वेतद्वीप भी है। यह सप्तऋषि मंड़ल के ऊपर विराजमान है। चूँकि ध्रुवलोक ही विष्णुलोक है, इसलिए समस्त लोकवासियों से पूजित है। विश्व प्लावन के समय बाकी वैकुंठलोकों की भांति ध्रुवलोक भी नष्ट नहीं होता है। भक्त ध्रुव की भक्ति अद्वितीय है। वैराग्य को प्राप्त करने का मार्ग, तपस्या के द्वारा भक्ति की वृद्धि कैसे किया जा सकता है, इन सबकी जानकारी ध्रुवचरित्र से प्राप्त होती है। भगवान को प्राप्त करने के लिए हर साधक को ध्रुव का भक्ति मार्ग अपनाना होता है। अपने बेटे को इतना महान बनाने का श्रेय ध्रुव की माता सुनीति को जाता है। माँ-बेटे, दोनों ने ही जीवन की पूर्णता को प्राप्त किया तथा सभी साधकों के मार्गदर्शक भी बने।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामि पुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिनमें विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

(गतांक से)

ध्यान साधना

ज्ञान दीक्षा की प्राप्ति के बाद वेंगमाम्बा अपने घर के पास के मन्दिर में हनुमान की मूर्ति के पीछे एकांत में बैठकर योग साधना करने लगी। उनकी सादना अन्न-जल लिए बिना कई दिन तक चलती रही। पुजारी ने वेंगमाम्बा के इस कार्य को एक दिन यकायक देखा और उनको तुरंत मन्दिर छोडकर चले जाने की आज्ञा दी। पुजारी ने यह भी कहा कि आगे से किसी भी दशा में मन्दिर में ठहरना नहीं चाहिए। इससे दु:खित वेंगमाम्बा ने निश्चय कर लिया कि आगे से उस गाँव में चैन से ध्यान साधना करना असंभव है। इसलिए वे गाँव छोडकर कहीं दूर निकल पडी। तब उनकी आँखों के सामने तिरुमल, जहाँ भगवान श्री वेंकटेश्वर का मन्दिर बना है, वह पर्वत दिखाई दिया।

भगवद सेवा

श्री वेंकटेश्वर के दर्शन के लिए सातों पहाड पार कर आयी वेंगमाम्बा को बडा आश्चर्य हुआ। क्योंकि उनके आने के पहले ही उनकी आध्यात्मिक कीर्ति वहाँ तक पहुँच चुकी थी। इसलिए मन्दिर के प्रशासनिक समिति के सदस्यों ने बडे आदर के साथ उनका स्वागत सम्मान किया। समिति ने उनको भगवान के दर्शन के लिए आवश्यक सहायता भी की। समिति के सदस्यों को यह सुनकर खुशी हुई कि वेंगमाम्बा वहीं ठहरकर भगवान की आध्यात्मिक सेवा करने वाली है। इसलिए समिति वालों ने उनके ठहरने के लिए आश्रम भी बनाकर दिया।

वेंगमाम्बा आद्यात्मिक सेवा के साथ भगवान की भक्ति को जन-जन तक पहुँचाने के लिए साहित्यिक कार्य भी करने लगी। उनसे रचित श्रीवेंकटाचलमाहात्म्य की रचना पर उनको असीमित कीर्ति प्राप्त हुई। इससे प्रसन्न प्रशासनिक समिति ने उनको और सुविधाएँ बनाकर देने के लिए तैयार थी। वेंगमाम्बा ने उनसे अपनी यह प्रार्थना रखी कि ''मुझे हर दिन नियमित समय पर श्री वेंकटेश्वर की आराधना को व्यक्तिगत रूप में करने का अवसर प्रदान करें।'' समिति ने उनकी प्रार्थना को तुरंत स्वीकार कर लिया। वेंगमाम्बा की बडी इच्छा थी कि उनके जीवन काल के बाद भी यह आराधना उनके नाम पर जारी हो। समिति ने उनकी ऐसी इच्छा को भी सदा के लिए मंजूर कर लिया। इसके अनुसार मन्दिर में श्री वेंकटेश्वर को उनकी एकांत सेवा के बाद आज भी वेंगमाम्बा के नाम पर मोतियों की आरती की जा रही है।

साहित्यिक सेवा

वेंगमाम्बा की बढती कीर्ति से प्रभावित भक्त जन उनके दर्शन तथा आशीर्वाद पाने के लिए बडी संख्या में आने लगे। जिससे वेंगमाम्बा ने महसूस किया कि भगवान की पूजा-ध्यान में बाधा पडती है। इसलिए वेंगमाम्बा वहाँ से थोडी दूर पर स्थित तुम्बुरुकोना नामक स्थान में आ पहुँची। वे वहाँ के शांत वातावरण में भगवान की ध्यान साधना करने लगी। यहाँ आकर ही वेंगमाम्बा ने अनेक आध्यात्मिक

ग्रंथों की रचना की। विष्णु पारिजातमु, रमा परिणय, चेंचु नाटकम्, श्रीकृष्ण मंजरी, श्री रुक्मिणी नाटकम्, गोपिका नाटकम्, श्रीवेंकटाचलमाहात्म्य, अष्टांगयोगसारम्, जलक्रीडा विलासम्, मुक्तिकांताविलासम्, तत्त्व कीर्तनम्, वशिष्ट रामायण आदि उनकी रचनाएँ हैं। उन्होंने भगवान की भक्ति को साधारण जन तक पहुँचाने के विचार से अपनी रचना में सरल शब्दों और सरस छंदों का प्रयोग किया है। वेंगमाम्बा ने साधारण जनता के बीच में रहकर अपनी रचनाओं के द्वारा भक्ति धारा को तेज बहाया। जिससे साधारण जन भी उनकी कविता को सरलता से गाकर भगवद् भक्ति में लीन हो जाने लगे। यह तो सच हैं कि आँध्र की कोई भी स्त्री उनकी भक्ति पूर्ण कविता से अपरिचित नहीं है। इसलिए आज भी देखा जाता है कि खेतों में कठोर परिश्रम करती नारी, वेंगमाम्बा के गीत गुनगुनाती हैं। यह स्पष्ट है कि आध्यात्मिक आजादी, नारी की आजादी, सामाजिक आजादी आदि में दैव योगिनी वेंगमाम्बा का कार्य हमेशा के लिए स्तुत्य एवं अविस्मरणीय है।

(समाप्त)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि चंदादारों के लिए सूचना

सप्तगिरि मासिक पत्रिका पाठकों को हर महीने सही ढंग से पहुँचाने के लिए विविध क्रियाकलाप कार्य कर रहे हैं विषय पाठकगण समझ सकते हैं। इसी विषय के दौरान भक्तों का पता क्रमबद्ध करने के लिए कार्यवाहीन चर्याये लेते है। पाठकगण इस विषय को दृष्टि में रखकर निम्नलिखित प्रकार अपना संबंधित विवरण प्रधान संपादक कार्यालय को सूचित कीजिए।

१. 'सप्तगिरि' मासिक पत्रिका के बारे में सुझाव/सूचनाएँ/शिकायतों को sapthagiri_helpdesk@tirumala.org के द्वारा सूचित कीजिए।

२. सप्तगिरि चंदादारों का पता क्रमबद्ध कराने के लिए ०८७७-२२६४५४३ फोन नंबर को चंदादार फोन करके अपना पूरा पता, पिन कोड, मोबाइल नंबर जैसे विवरण कार्यकालीन (सुबह १०.३० से सायं ५.०० के अंदर) समयों में संपर्क करें।

३. उपरोक्त फोन नंबर या वेबसैट sapthagiri_helpdesk@tirumala.org के द्वारा भी अपने विवरण को बता दे सकते हैं।

४. आनलॉइन चंदादार अपने पूरे पते के संबंधित विवरण ति.ति.दे. वेबसैट के द्वारा बता दें।

प्रधान संपादक,

सप्तगिरि कार्यालय, तिरुपति।

श्री प्रपन्नामृतम्

(पहला अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

भगवान् श्रीवैकुण्ठनाथ के साथ आदिशेष का सम्वाद और श्रीरामानुजाचार्य के अवतार का हेतु

अस्ति वैकुण्ठनगरं सर्वलोकेषु विश्रुतम्।
नित्यमुक्तैः सेव्यमानं विष्णोः प्रीतिकरं शुभम्।।

तत्र मध्ये मणिमयं मंडपं चास्ति शोभनम्।
सहस्रस्तम्भसंयुतं विष्णोः प्रीतिकरं शुभम्।।

तन्मध्ये सुमहाबाहुः फणिराजो महाबलः।
सहस्रफणसंयुक्तस्तत्रास्ते विमलद्युतिः।।

तस्योपरि महाबाहुः शंखचक्रगदाधरः।
इन्दीवरदलश्यामः पद्मपत्रनिभेक्षणः।।

एवं सर्वात्मनस्तस्य श्रीनिवासस्य शार्ङ्गिणः।
श्रीहरेरुदभूत्काचिच्चिन्ता निर्हेतुका तदा।।

केनोपायेन वैकुण्ठमिमां जन्तून्नयाम्यहम्।
इति चिन्तयमाने तु लोकनाथे हरौ तदा।।

शय्याभूतः फणीशेषस्तमाह पुरुषोत्तमम्।
का चिन्ता तव देवेश परिपूर्णस्य नित्यशः।।

विष्णुरुवाच

भोगीश सुमहावीर्य श्रृणु तद्वचनं मम।
यदर्थं चिन्तयाम्यद्य संदृश्य दुःखितान् जनान्।।

श्रिया सहावतीर्णोऽस्मि जनरक्षणहेतुना।
अवतारेषु मां सर्वे मन्यन्ते प्राकृता जनाः।।

राजानं चाऽपिऽगोपालं प्राकृतं पुरुषं यथा।
तदर्थं चिन्तयाम्यद्य फणिराज महामते।।

भोगिराज महाप्राज्ञ समर्थो जनरक्षणे।
अवतीर्यंभवान्भूमौ जनान् रक्षितुर्महति।।

श्रीशेषउवाच

तवाशक्यं महाबाहो कार्यं लोकेषु सर्वदा।
नास्ति विष्णो विशालाक्ष जन्तुरक्षणतत्पर।।

तथापि कृपया विष्णो मां नियोक्ष्यसि रक्षणे।
त्वद्दासभूते मया कर्तव्यमविचारतः।।

प्रदक्षिणीकृत्य तदा ववन्दे चरणौ हरेः।
फणिराजः प्रसन्नात्मा भूम्यां चक्रे मनस्तदा।।

चैत्रार्द्रसम्भवं विष्णोर्दर्शनस्थापनोत्सुकम्।
तुण्डीरमण्डले शेषमूर्तिं रामानुजं भजे।।

दिव्य वैकुण्ठलोक

वैकुण्ठलोक का वर्णन प्रसंग प्राप्त होने से आचार्य सर्वप्रथम लक्ष्मीपति हस्तिगिरिनिवास रसिक अनेकों सूर्य की प्रभा से पूर्ण भगवान् देवराज की वन्दना करते हुए

कहते हैं कि - सर्वलोक विख्यात, नित्यमुक्त चेतनों से सेवित, भगवान् विष्णु को प्रिय, अनेकों गोपुरों एवं मण्डपों से सुशोभित वैकुण्ठपुरी के दिव्य प्रासादों की हवेलियों में नवरत्न जटित कक्षों की शोभा अपूर्व है। उस नगरी के उद्यानों के वृक्ष सोने के हैं। यहाँ के विमान चन्द्रकान्त मणि जटित हैं। यहाँ की दिव्य अप्सरायें, दैदीप्ततोरण करोड़ों चन्द्र की तरह चमकते हुए पुरुष, दिव्य पक्षियों तथा कमलों से भरी सजल बावली एवं तालाब तथा ध्वजा एवं पताकायें, यहाँ की शोभा को और अधिक बढ़ा रही हैं। इस दिव्य नगरी की अनन्त दिव्य, शाश्वत, नित्यानन्द एवं सुख के नाम से अभिहित किया जाता है।

इस वैकुण्ठपुरी के बीच में ब्रह्मादि देवताओं से भी अगम्य, भक्तमात्रैकगम्य उत्तम भवनों से सुशोभित भगवान् श्रीमन्नारायण का दिव्यधाम है। अनेकों सूर्य की आभामय ध्वजा पताका एवं मालाओं से मण्डित चाहरदीवारियों वाले एवं दिव्य रत्न जटित गोपुरों वाले इस धाम के चारों दरवाजों पर वीर द्वारपाल विराजमान हैं। इस धाम की परिचारिकायें सर्वालंकारालंकृत हैं।

इस मण्डप के भी बीच में हजारों स्तम्भ वाला दिव्य कर्पूर चन्दन, कुंकुमादि के आमोद से सुवासित, दिव्य अप्सराओं तथा भगवान् के नित्यमुक्त पार्षदों से परिपूर्ण मणिमय, परवासुदेव भगवान् को अत्यन्त प्रिय, एक मण्डप है जिसके मध्य में सुखासीन सहस्र फणों वाले श्रीशेषजी के ऊपर दिव्य मंगल विग्रह, कमलनयन, अपने सौन्दर्य से कोटि कामदेव को भी लज्जित करते हुए, करोड़ों सूर्यों की तरह दैदीप्त कमलवत्सुकुमार, श्यामकान्ति, शंख-चक्र-गदा-पद्म धारण किये हुए दिव्य हार कटक कुण्डलादि आभूषणों से विभूषित, पीताम्बर पहने, शाश्वत युवती श्रीदेवी, भूदेवी एवं नीलादेवी से तथा नित्यमुक्त पार्षदों से सुसेवित भगवान् परवासुदेव सूखपूर्वक विश्राम कर रहे है।

एक समय इन्हीं भगवान् को श्रीलक्ष्मीजी की इच्छा स्वरूप संसारियों को वैकुण्ठ में लाने की चिन्ता हुई। भगवान् को चिन्तित देख शय्या स्वरूप श्रीशेषजी ने पूछा - भगवन्! आप तो अवाप्त - समस्त काम हैं, आपको चिन्ता कैसी? इसका कारण समझ में नहीं आ रहा।

श्रीशेष के प्रश्नों को सुनकर भगवान् बोले - ''महावीर! लोक रक्षार्थ जब मैं लक्ष्मी के साथ भूमण्डल पर अवतरित होता हूँ तो लोग मुझे प्राकृत पुरुषों की तरह ही गोप, राजा आदि मानने लगते हैं। लोकरक्षार्थ अवतरित ईश्वर नहीं मानते।''

आज से पूर्व भी मैंने अपने आयुध शंख, चक्रादिकों तथा विष्वक्सेनादि सूरियों को लोकरक्षार्थ भूमण्डल पर भेजा, किन्तु वहाँ जाकर वे पापियों की वाणी ''हम लोगों को वैकुण्ठधाम दुर्लभ है'' सुनकर मौन हो गये और विफल होकर अपने धाम को लौट आये। चूँकि आपको छोड़कर संसारियों की रक्षा करने में कोई दूसरा समर्थ नहीं अतः आप पृथ्वी पर अवतीर्ण होकर संसारियों को सन्मार्ग में लगाने का काम करें।''

भगवान् की उपर्युक्त वाणी सुनकर शेष बोले - ''भगवन्! आप ही इस जड़ चेतनात्मक संसार की सृष्टि पालन एवं प्रलय रूप मोक्ष प्रदान के कारण हैं। सदा जीव रक्षा में संलग्न आपसे अशक्त क्या है? किन्तु मैं आपका दास हूँ। अतः आपकी आज्ञा से संसार में जाकर जीव रक्षण का काम निस्संकोच एवं निस्सन्देह अवश्य करूँगा।

आपकी माया से मोहित यह संसार अपने को भी भूल गया है अतः श्रीमान् यदि मुझे अपनी उभयविभूतियों (लीलाविभूति एवं नित्यविभूति) का अधिकार दें तो मैं इन संसारी जीवों को किसी न किसी तरह वैकुण्ठ अवश्य पहुँचाऊँगा।''

श्रीशेषजी की वाणी सुन भगवान् उन्हें दोनों विभूतियों का अधिकार सौंपकर बोले - ''मेरी आज्ञा से, पहले से ही कुछ लोग भूमण्डल में जाकर अर्थपंचकादि ज्ञान एवं पंचसंस्कार सम्पन्न हो भगवद्भक्ति में लीन हैं किन्तु वे ज्ञानोपदेश देकर जीवों को भगवद्भक्त बनाने में अक्षम हैं। तुम्हें इसीलिये भेज रहा हूँ।''

भगवान् की आज्ञा पाकर श्रीशेष ने श्री चरणों की प्रदक्षिणा एवं साष्टांग प्रणाम करके पृथ्वी पर अवतार लेने का संकल्प किया।

।। श्रीप्रपन्नामृत का पहला अध्याय पूर्ण हुआ ।। **(क्रमशः)**

(गतांक से)

भारत के प्रसिद्ध १६ हनुमान मंदिर

-श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया

६. बेट द्वारका हनुमान दंडी मंदिर (गुजरात)

बेट द्वारका से चार मील की दूरी पर मकरध्वज के साथ हनुमानजी की मूर्ति स्थापित है। कहते है कि पहले मकर ध्वज की मूर्ति छोटी थी। परंतु समय जाने पर अब दोनों मूर्तियाँ एक ऊँचाई की हो गई है। यहाँ रावण ने भगवान श्रीराम लक्ष्मण को इसी स्थान पर छिपाकर रखा था। जब हनुमानजी दोनों को लेने के लिये आये तब उनका मकरध्वज के साथ घोर युद्ध हुआ अंत में हनुमानजी ने उसे परास्त कर उसी की पूँछ से उसे बांध दिया। उनकी स्मृति में यह मूर्ति स्थापित है। कुछ धर्म ग्रंथों में मकरध्वज को हनुमानजी का पुत्र बताया है, जिस का जन्म हनुमानजी के पसीने द्वारा एक मछली से हुआ था।

७. बालाजी हनुमान मंदिर मेहंदीपुर (राजस्थान)

राजस्थान के दौसा जिल्ले के पास दो पहाडियों के बीच बसा हुआ मेहंदीपुर नामक स्थान है। यह मंदिर जयपुर-बांदीकूइ बस मार्ग पर जयपुर से लगभग ६५ कि.मी. दूर है। दो पहाडियों के बीच की घाटी में स्थित होने के कारण इसे घाटा मेहंदीपुर भी कहते है। जनश्रुति है कि यह मंदिर करीब एक हजार साल पुराना है। यहाँ पर एक बहुत विशाल चट्टान में हनुमानजी की आकृति स्वयं ही उभर आई थी। इसे ही हनुमानजी का स्वरूप माना गया है। इन के चरणों में छोटी सी कुंडी है। जिस का जल अखूट है यह मंदिर और हनुमानजी विग्रह काफी शक्तिशाली एवं चमत्कारीक माना जाता है। कहाँ जाता है कि मुगल शासन में इस मंदिर को तोड़ने का प्रयास किया था,

लेकिन चमत्कारिक रूप से मंदिर को कोई भी नुकसान नहीं हुआ।

८. डुल्या मारुति मंदिर-पुना (महाराष्ट्र)

पुना के गणेशपेठ में स्थित यह मंदिर काफी प्रसिद्ध है। श्री डुल्या मारुति का मंदिर संभवतः ३५० साल पुराना लगता है। संपूर्ण मंदिर पत्थर का बना हुआ आकर्षक और भव्य है। मूल रूप से डुल्या मारुति की मूर्ति एक काले पत्थर पर अंकित की गई है। यह मूर्ति पांच फीट ऊँची और ढाई से तीन फीट चौडी और अत्यंत भव्य एवं पश्चिमाभिमुख है। हनुमानजी की दाई ओर श्री गणेशजी बिराजमान है, सभामंडप के द्वारा के ठीक सामने छत से टंगा एक पित्तल का घंटा है इस के पर शक संवत १७०० अंकित है।

९. श्री कष्टभंजन हनुमान मंदिर-सारंगपुर (गुजरात)

गुजरात में अहमदाबाद-भावनगर रेल्वे लाइन पर बोटाद जंकशन से सारंगपुर १२ मील दूर है। यहाँ एक प्रसिद्ध और स्वयंसिद्ध मारुति मूर्ति स्थापित है। महायोगिराज गोपालानंद स्वामी ने इस शिलामूर्ति की प्रतिष्ठा विक्रम संवत १९०५ अश्विन कृष्णपंचमी के दिन की थी। कहाँ जाता है कि अपने अंदर कोई नेगेटीव ऊर्जा और जंतरमंतर है तो यहाँ मूर्ति के सामने बैठकर उपासना से सब मंतरजंतर और नेगेटीव ऊर्जा भाग जाती है। स्वामी नारायण संप्रदाय का विश्व प्रसिद्ध यह मंदिर है।

१०. यंत्रोद्धारक हनुमान मंदिर-हंपी (कर्णाटक)

कर्णाटक के बल्लारी जिले में हंपी नामक नगर में ये हनुमानजी का मंदिर है। यंत्रोद्धारक हनुमानजी नाम से प्रचलित है। विद्वानों के मतानुसार यही क्षेत्र प्राचीन किष्किन्धा नगरी है। वाल्मीकि रामायण व रामचरितमानस में इस स्थान का वर्णन मिलता है। संभवतः इसी स्थान पर किसी समय वानरों का विशाल साम्राज्य स्थापित था। आज भी यहाँ अनेक गुफाये देखने मिलती है।

११. गिरजाबंध हनुमान मंदिर-रतनपुर (छत्तीसगढ)

बिलासपूर से २५ कि.मी. की दूर महामाया नगरी रतनपुर में हनुमानजी मंदिर स्थित है। यह देवस्थान पूरे भारत में सब से अलग है। इसकी मुख्य वजह माँ महामायादेवी और गिरजाबंध में स्थित हनुमानजी मंदिर है। खास बात यह है कि विश्व में हनुमानजी का यह अकेला मंदिर है जहाँ हनुमानजी नारी स्वरूप में है। इसके शरण में आनेवाले कोई भी भक्त निराश नही लौटता। ये हनुमानजी भक्तों की सर्व प्रकार मनोकामना पूर्ण करता है।

१२. उलटे हनुमान मंदिर-सांवरे (इंदोर)

उज्जैन से केवल ३० कि.मी. की दूर इंदोर में यह हनुमानजी स्थित है। यहाँ उलटे रूप में हनुमानजी की मूर्ति की पूजा की जाती है। यह मंदिर सांवरे नामक

स्थान पर स्थित है। यहाँ की मूर्ति उलटी है भगवान का पैर ऊपर है और मुख नीचे की ओर है। कहाँ जाता है कि रावण ने रामलक्ष्मण का अपहरण किया और पाताल में लेकर चले गये तब हनुमानजी उसे छुडवाने के लिये पाताल में गया तब पाताल में जाते समय उसका पैर आकाश की ओर और मुख पाताल की ओर था। इसीलिए यहाँ इस रूप में पूजा की जाती है।

१३. प्राचीन हनुमान मंदिर-कर्नाट पेलेस (नई दिल्ही)

यह महाभारत कालीन प्राचीन हनुमान मंदिर है। यह स्वयंभू बालचंद्र अंकित शिखरवाला यह मंदिर आस्था का महान केन्द्र है। दिल्ही का पुरातनी नाम इन्द्र प्रस्थ है। जो यमुना तट पर विराजित है। पांडवों द्वारा महाभारत काल में बसाया गया था। इस समय पांडव इन्द्रप्रस्थ और कौरव हस्तिनापुर पर राज्य करते थे। हिन्दू मान्यता अनुसार पांडवों में द्वितीय भीम को हनुमानजी का भाई माना जाता था। दोनों ही वायुपुत्र कहा जाता है। इन्द्रप्रस्थ की स्थापना के समय पांडवों द्वारा इस शहर में पांच हनुमान मंदिर की स्थापना की थी। ये मंदिर उन्ही पांचों में से एक है।

१४. श्री बाल हनुमान मंदिर-जामनगर (गुजरात)

सन् १५४० में गुजरात में जामनगर में, जामनगर की स्थापना के समय स्थापित यह हनुमान मंदिर गुजरात का गौरव प्रतीक है। यहाँ पर सन् १९६४ से ''श्रीरामधुनी'' का जाप लगातार चलता आ रहा है। जिस कारण इस मंदिर का नाम ''गिन्निस बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड'' में शामिल किया गया है।

१५. महावीर हनुमान मंदिर-पटना (बिहार)

पटना जंकशन के ठीक सामने महावीर मंदिर के नाम से श्री हनुमानजी का मंदिर है। उत्तर भारत में माँ वैष्णोदेवी मंदिर के बाद यहाँ ही सबसे ज्यादा चढ़ावा आता है। इस मंदिर के अंतर्गत महावीर केसर संस्थान, महावीर वात्सल्य होस्पीटल, महावीर आरोग्य होस्पीटल तथा बहुत से अनाथालय एवं अस्पताल चल रही है। ये संकट मोचन के रूप में विराजमान है।

१६. श्री पंचमुख आंजनेय हनुमान मंदिर-तमिलनाडु

तमिलनाडु के कुंभकोणम नामक स्थान पर श्री पंचमुखी हनुमान (श्री आंजनेयस्वामी) का बहुत बडा मठ है। यहाँ पर भी श्री हनुमानजी की 'पंचमुख रूप' में विग्रह स्थापित है। जो अत्यंत भव्य एवं दर्शनीय है। अहिरावण और महिरावण ने श्री रामलक्ष्मण को अगवा कर लिया था। तब हनुमानजी ने पंचमुख धारण करके इसी स्थान से अपनी खोजयात्रा प्रारंभ की थी। खोजने के बाद पंचमुख हनुमान ने अहिरावण और उसका भाई महिरावण का वध किया था। ये हनुमानजी भक्तों के सारा संकट दूर करते है।

भारत के ये १६ प्रसिद्ध हनुमान मंदिर की यात्रा करके धन्यता का अनुभव करते है।

जयश्रीराम (समाप्त)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको अवश्य ध्यान रखें

- ☑ तिरुमल-यात्रा के लिए निकलने के पूर्व अपने इष्ट अथवा कुलदेवता की प्रार्थना करें।
- ☑ भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के पूर्व श्री स्वामि पुष्करिणी में स्नान करें, श्री वराहस्वामीजी की पूजा करें।
- ☑ मंदिर के अंदर भगवान पर ही ध्यान केंद्रित करें।
- ☑ मंदिर के अंदर पूर्णतः मौन रहें तथा ''श्री वेंकटेशाय नमः'' का उच्चारण करें।
- ☑ तिरुमल के पास स्थित पापविनाशनम् तथा आकाशगंगा पवित्र तीर्थों में स्नान करें।
- ☑ तिरुमल में रहते समय हमारे रीति-रिवाजों, आचार-व्यवहारों का पालन करें।
- ☑ अपनी भेंट हुंडी में ही डालें।
- ☑ तिरुमल मंदिर के परिसरों को स्वच्छ रखें और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों को मात्र ही उपयोग करें।
- ☑ श्री बालाजी के दर्शन करते समय संप्रदाय वस्त्र धारण करना है।

तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- ☒ अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- ☒ भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- ☒ दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- ☒ मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- ☒ तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- ☒ पानी और बिजली को वृथा न करें।
- ☒ अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- ☒ पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- ☒ चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- ☒ भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- ☒ फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- ☒ तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- ☒ सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- ☒ विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

तिरुमल में निषेधित कार्य

- 🚫 तिरुमल में धूम्रपान, शराब, मांसाहार आदि निषेधित है।
- 🚫 अन्य मतों का प्रचार न करें।
- 🚫 पशु, पक्षी का वध निषेधित है।
- 🚫 तिरुमल में जुआ, पासा आदि को खेलना या अन्य खेलों में धन को बाजी लगाना निषेधित है।
- 🚫 भिखमंगों का प्रोत्साहन न करें।
- 🚫 तिरुमल में प्रईवेट व्यक्तियों द्वारा केशखंडन या कल्याणकट्टाओं (क्षुरकशाला) को चलाना निषेधित है।
- 🚫 आवास को अनधिकारिक तौर पर देना या लेना मना किया गया है।

- कार्यनिर्वहणाधिकारी

भगवान

'सरलता' से प्राप्त होते हैं

- डॉ.डी.उमादेवी

भगवान किसी योग साधना से या कोई क्रिया-कर्म से प्राप्त नहीं होते हैं, तीर्थयात्रा पर निकलने से नहीं मिलते हैं। भगवान को पाने के लिए सरलता प्राप्त करने की जरूरत है। जो लोग सरल होते हैं भगवान उनके वश हो जाते हैं। लोकश्रुति पर आधारित यह कहानी इस बात को स्पष्ट करती है।

बहुत साल पहले की बात है। आनंद नामक एक भोलाभाला युवक रहता था। वह बहुत आलसी था। दिन भर कोई काम नहीं करता था, बस खाता ही रहता था। घर के लोग परेशान होकर उसे घर से निकाल दिया। वह घर से निकलकर यूँ ही भटकते हुए एक आश्रम पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि एक गुरू जी और बहुत सारे शिष्य हैं और शिष्य कोई काम नहीं कर रहे हैं। बस भगवान की पूजा कर रहे हैं। आनंद ने मन में सोचा कि यह तो बढिया है, कोई कामधाम नहीं बस पूजा ही तो करना है। गुरू जी के पास जाकर पूछा, ''क्या यहाँ मैं रह सकता हूँ?''

गुरू जी बोले, हाँ क्यों नहीं?

आनंद - लेकिन मैं कोई काम धाम नहीं कर सकता हूँ।

गुरू जी - कोई काम नहीं करना बस पूजा करनी होगी।

आनंद - ठीक है, कोई दिक्कत नहीं, वह तो मैं कर लूँगा।

इस प्रकार आनंद उसी आश्रम में मजे से रहने लगे। न कोई काम, न कोई धाम। बस सारा दिन खाते रहो और प्रभु भक्ति में भजन गाते रहो।

एक महीने के बाद एकादशी आयी। दोपहर होने को आया, लेकिन कोई आनंद को खाने पर नहीं बुलाया तो उसने रसोई में जाकर देखा, खाने की कोई तैयारी नहीं। उसने गुरू जी से पूछा - ''आज खाना नहीं बनाया क्या?

गुरू जी ने कहा - आज तो एकादशी है। सब लोग उपवास रखते हैं। तुम्हारा भी उपवास है। आनंद ने कहा कि ''अगर हमने उपवास कर लिया तो मर जायेंगे। हम भूखा नहीं रह सकते।'' तब गुरू जी ने कहा- ''ठीक है, तुम न करो उपवास, पर खाना कोई नहीं बनाएगा। तुम खुद बनाओ। पर शर्त यह है कि पहले भगवान को भोग

लगाकर ही खाना चाहिए।'' आनंद ने सम्मति देकर खाना बनाने के लिए आवश्यक चीजें - लकडी, आटा, तेल, घी, सब्जी आदि लेकर नदी के किनारे पहुँचे और खाना बनाया। गुरू जी की शर्त के अनुसार राम जी को भोग लगाकर भजन गाने लगा। ''आओ मेरे राम जी, भोग लगाओ जी, प्रभु राम आइए, श्रीराम आइए, मेरे भोजन का भोग लगाइए।'' पर भगवान नहीं आये तो बेचैन हो गया मुझे तो भूख लग रहा है, और राम जी नहीं आ रहे हैं, क्या करू मैं? आनंद यह नहीं जानता था कि भगवान सचमुच प्रगट नहीं होते हैं। पर गुरू जी की बात मानना जरूरी है। फिर उसने कहा, देखो प्रभु राम जी, मैं समझ गया कि आप क्यों नहीं आ रहे हैं? मैंने तो रूखा-सूखा बनाया है, आपको तो तर माल खाने की आदत है। इसलिए तो नहीं आ रहे हैं... तो सुनो प्रभु... आज वहाँ भी कुछ नहीं बना है, सब को एकादशी है, खाना हो तो यह भोग ही खा लो।

प्रभु श्रीरामचन्द्र अपने भक्त की सरलता पर प्रसन्न हो गये और माता सीता के साथ प्रगट हो गये। आनंद महाराज असमंजस से पड गये। गुरू जी ने कहा कि राम जी को भोग लगाना है। लेकिन यहाँ तो मैया सीता भी है। मैंने तो बस दो जनों के लिए ही भोजन बनाया है। चलो कोई बात नहीं आज इन्हें ही खिलाते हैं।'' दोनों को खाना परोस कर आनंद महाराज बोले आप दोनों को देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। पर मैं भूखा रह गया हूँ। अगली बार जब आयेंगे पहले ही बता देना कि कितने लोग आ रहे हैं? भगवान खुश होकर प्रसाद ग्रहण करके चले गये।

अगले साल फिर एकादशी आयी। आनंद महाराज गुरू जी के पास जाकर कहा, गुरू जी ज्यादा अनाज दीजिए, भोग के लिए दो लोग आ रहे हैं। गुरू जी ने सोचा यह ज्यादा खाना चाहता हैं इसीलिए ज्यादा मांग रहा है। लेकिन कुछ न कहकर ज्यादा लेने केलिए अनुमति दे दिया। अब की बार उसने तीन लोगों के लिए खाना बनाया। भोग लगाकर राम जी को बुलाया। ''ओ मेरे राम जी, भोग के लिए आइए राम जी।'' इस बार प्रभु श्रीरामचन्द्र भक्त के साथ कौतुक करने के लिए अपने साथ भरत, शत्रुघ्न और हनुमानजी को भी साथ लिवा लाये। भक्त को चक्कर आ गया। सब को खाना परोसकर बस देखता रह गया। अनजाने में ही उसकी एकादशी हो गई।

तीसरे साल की एकादशी पर आनंद महाराज गुरू जी से जाकर बोले - आप अनाज ज्यादा देना। पता नहीं राम जी कितने लोगों को साथ लेकर आते हैं।'' गुरू जी को उस पर संदेह आया। यह अनाज बेच रहा होगा। इसकी खबर लेना चाहिए। फिर गुरू जी ने प्रकट रूप में कहा कि जितना अनाज चाहिए, ले लेना। आनंद ज्यादा से ज्यादा अनाज लेकर नदी के किनारे पहुँचे। गुरू जी ने छिप कर उसे अनुसरण किया और देखने लगा। आनंद ने सोचा कि पता नहीं कितने लोगों को लेकर आयेंगे राम जी। पहले उन को बुलाता हूँ। फिर खाना बनाऊँगा। आनंद ने श्रीरामजी को बुलाया। अब की बार राम जी पूरे दरबार को साथ लेकर आये। राम जी ने देखा कि प्रसाद तैयार नहीं है। राम के पूछने पर उसने कहा कि जितना भी बनाओ मुझे तो मिलेगा नहीं। फिर बनाने का फायदा क्या है? इसलिए आप ही खुद बना लो और खुद खाओ।

राम जी मुस्कुराये, सीता माता उसकी मासूमियत को देखकर गद्‌गद्‌ हो गई। अपने भक्त की इच्छा को पूरा

करने के लिए सब मिलकर खाना बनाने लगे। लक्ष्मण लकडी लाने लगा, सीता मैया चावल बीनने लगी। इस प्रकार हर व्यक्ति कोई न कोई काम करने लगा। कई ऋषि, मुनि, यक्ष, गंधर्व सभी यह कौतुक देखने के लिए और प्रसाद पाने के लिए आये। यह कैसा चमत्कार है? भक्त के लिए भगवान भोजन बना रहा है। गुरू जी वहीं छिपे बैठा हुआ था लेकिन यह सब उन्हें नहीं दिख रहा था। गुरू जी यह देख रहा था कि आनंद महाराज वहीं एक कोने में बैठ कर कहीं देख रहा है। कोई काम नहीं कर रहा है। गुरू जी ने उससे पूछा ''ऐसा क्यों बैठे हो? तब उसने कहा कि ''देखिए गुरू जी, सीता माता खाना बना रही है। और यह भी देखिए कितने लोग आते हैं प्रभु के साथ। इसलिए मैं ज्यादा अनाज मांग रहा था। गुरू जी बोले, मुझे तो कुछ नहीं दिख रहा है तुम्हारे अनाज के सिवा। आनंद ने माथा पकड लिया, एक तो इतनी मेहनत करवाते हैं प्रभु, भूखा भी रखते हैं और ऊपर से गुरू जी को दिख भी नहीं रहे। यह और भी बडी मुसीबत है।

प्रभु से कहा, आप गुरू जी को क्यों नहीं दिख रहे हैं।

प्रभु बोले - मैं उन्हें नहीं दिख सकता।

आनंद बोला - क्यों, वे तो बडे पंडित हैं, ज्ञानी है, विद्वान हैं उन्हें तो बहुत कुछ आता है उनको क्यों नहीं दिखते आप?

प्रभु बोले, माना कि उनको सब आता है पर वे सरल नहीं हैं तुम्हारी तरह। इसलिए उनको नहीं दिख सकता।

आनंद ने गुरू जी से कहा, गुरू जी, प्रभु कह रहे हैं कि आप सरल नहीं है, इसलिए आपको नहीं दिखेंगे। गुरू जी रोने लगे ''वाकई मैंने सबकुछ पाया पर सरलता नहीं पा सका तुम्हारी तरह, और प्रभु तो मन की सरलता से मिलते हैं।

प्रभु प्रकट हो गए और गुरू जी को भी दर्शन दिये। इस तरह एक भक्त के कहने पर प्रभु ने रसोई भी बनाई।

प्रभु श्रीरामचन्द्र ने यह साबित किया कि भगवान भक्तों के वश में रहते हैं और उन्हें ''सरलता'' से पा सकते हैं।

तिरुमल तिरुपति घाट रोड में यान करनेवाले यात्रियों के लिए विज्ञापन

नीचे सूचित समयों के बीच वाहनदारों का प्रवेश रद्ध कर दिया गया है।

१. द्विचक्रवाहन - रात ११.०० बजे से प्रातःकाल ४.०० बजे तक

२. अन्य वाहन (कार और बस) - अर्थरात्रि १२.०० बजे से प्रातःकाल ३.०० बजे तक

३. कुछ अनिवार्य कारणों के कारण उपर्युक्त समयों में परिवर्तन होने की संभावना है।

सूचना - तिरुमल-तिरुपति घाट रोड से यात्रा करनेवाली मोटर घाडीवालें अपना वाहनों से संबंधित 'बार कोड रसीद' को स्कॉनिंग करना अनिवार्य है।

लौकिक जीवन में प्राणायाम की आवश्यकता

- श्री डी.चैतन्यकृष्ण

योग के आठ अंगों में प्राणायाम चौथा अंग है। वेद तथा पुराणों में प्राण को वायु कहा गया है। इस प्राण-अपान वायु के रोकने का नाम ही 'प्राणायाम' नाम दिया गया है। वायु को चार प्रकार से रोका जाता है **१. बाह्यप्राणायाम -** फेफड़ों में स्थित प्राण को बाहर निकला कर बाहर ही रोकना। **२. आभ्यन्तर प्राणायाम -** बाहर के प्राण को अन्दर लेकर अन्दर ही रोके रखना। **३. स्तम्भवृत्ति प्राणायाम -** प्राण को जहाँ का तहाँ रोक देना तथा **४. बाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी प्राणायाम -** बाह्य व आभ्यन्तर प्राणायामों को जोड़ कर करना।

'मनुस्मृति' में प्राणायाम करने से लाभ की परिशीलन करे, तो -

तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः।

प्राणायामैर्दहेद् दोषान्, धारणाभिश्च किल्बिशान्।
प्रत्याहारेण संसर्गान् ध्यानेनाऽनीश्वरान् गुणान्।।

अर्थात् प्राणायाम करके दोषों का निवारण कर सकते है। दोष किसे कहते है, इस विषय में योगदर्शन में पाँच प्रकार के दोषों का वर्णन मिलता है - अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश।

इन सबका नाश प्राणायाम करने से होता है। पतंजलि योगदर्शन के दूसरे पाद में - ''ततः क्षीयते प्रकाशावरणम्'' अर्थात् प्राणायाम के अनुष्ठान द्वारा प्रकाश का आवरण नष्ट होता है। प्रकाश का अर्थ-ज्ञान, विवेक, वैराग्य। इन्हीं का जो आवरण है वह है अज्ञान। इस अज्ञान को प्राणायाम नष्ट कर देता है।

मनुस्मृति में -

''दह्यन्ते ध्यायमानानां, धातूनां हि यथा मलाः।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते, दोषाः प्राणस्य निग्रहात्।।

जैसे भट्टी के अन्दर तपाने पर स्वर्णादि धातु के मल जल जाते हैं उसी प्रकार प्राणायाम से इंद्रियों के दोष भी नष्ट हो जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने इन इंद्रियों में मन को भी गिना है। दर्शनों की दृष्टि में बुद्धि आदि भी इंद्रियों में ही शामिल हैं। प्राणायाम से इन सबके दोष दूर हो जाते हैं। जिस प्रकार निरंतर तपाने पर धातु की चमक बढ़ती जाती है, उसी प्रकार निरंतर प्राणायाम द्वारा सभी इंद्रियाँ प्रखर हो जाती हैं।

हमारे शरीर में ६०० खरब कोशिकाएँ हैं। इन कोशिकाओं को प्राण से ही जीवनी-शक्ति मिलती है। इन समस्त कोशिकाओं को प्राणवायु की पूर्णपूर्ति प्राणायाम से ही संभव है।

समाज में जो भी अच्छाइयाँ अथवा बुराइयाँ है उनका मुख्य कारण मन है। जिसका मन विचलित है, वश में नहीं है वह पतन शील ही है। मन को वश में करने का सुलभातिसुलभ तरीखा है ''प्राणायाम।'' कहाँ गया है कि - ''प्राणो हि बध्यते तेन मनस्तेनैव बध्यते।'' अर्थात् मन को वही वश में कर सकता है जिसने प्राणों को वश में कर लिया है। तप पूर्वक निरन्तर प्राणायाम से मन को वश में किया जा सकता है।

जिससे मनुष्य प्रगतिशील बनता है। मनुस्मृति में प्राणायाम करने के लिए-

''प्राणायामा ब्राह्मणस्य, त्रयोऽपि विधिवत् कृताः।
व्याहृति प्रणवैर्युक्ता, विज्ञेयं परमं तपः।।''

ब्रह्मविदों को ओंकार के साथ सप्तव्याहृतियों से विधिवत प्राणायाम जितनी शक्ति हो उतने करना चाहिए। परन्तु तीन से न्यून न करें। यह ही परम तप हैं। भगवद्गीता के चौथा अध्याय में -

''अपाने जुह्वति प्राणं, प्राणेऽपानं तथापरे।
प्राणापानगतीं रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः।।२९।।''

ऊपर बताएँ गये चार प्रकार के प्राणायामों से लाभ के विचार करने पर कुछ विषय सामने आते हैं। वे-

उनकी एकाग्रता, मनोनियन्त्रण, नाडी व्यवस्था का ठीक होना, श्वसन तंत्र सुव्यवस्थित होना, बुद्धि-स्मृति-बल-पराक्रमादि का बढ़ना, शरीर में स्फूर्ति आना हैं।

इन सब बातों से यही ज्ञातव्यविषय है कि स्वयं को विकसित तथा श्रेष्ठ बनाने हेतु 'प्राणायाम' को अपने दैनिक जीवन में लाना अनिवार्य हैं। जिससे निरोग अर्थात् स्वास्थ्य जीवन की प्राप्ति संभव है।

यात्रियों को सूचना

१. मुफ्त में सामान परिवहन केन्द्रः तिरुपति के अलिपिरि से और श्रीवारि मेट्टु से पैदल रास्ते में जानेवाले भक्तों को अपने सामान को अलिपिरि और श्रीवारि मेट्टु के पास स्थित मुफ्त सामान परिवहन केन्द्र में देना चाहिए। फिर इस सामान को तिरुमल स्थित सामान परिवहन केन्द्र में वापस लेना होगा।

२. पीने का पानी और सुरक्षाः अलिपिरि से पैदल रास्ते में जानेवाले भक्तों को रास्ते भर पीने के पानी को प्रबंध किया गया है और यात्रियों की सुरक्षा के लिए देवस्थान ने सुरक्षाकर्मियों की नियुक्ति की।

३. तिरुमल में ठहरने के लिए आवास समुदायः भक्तों ने ठहरने के लिए तिरुमल में निःशुल्क आवास समुदाय की व्यवस्था की गयी है। इस में मुफ्त लॉकर, मुफ्त भोजन और शौचालय की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

४. बस की सुविधाः तिरुमल में एक प्रांत से दूसरे प्रांत तक जाने के लिए मुफ्त में बस की व्यवस्था की गयी है। लगभग १२ बसें इस कार्य में संलग्न हैं। ति.ति.देवस्थान के आध्वर्य में हर ४ मिनिट को एक बस २४ घंटे चलते रहते हैं।

५. निःशुल्क भोजन की सुविधाः तिरुमल मंदिर के निकट मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा नित्य अन्नदान भवन समुदाय में भक्तों को निःशुल्क भोजन की सुविधा उपलब्ध है।

६. क्यू कांप्लेक्स में प्रसाद वितरणः 'क्यू कांप्लेक्स' में श्री बालाजी के दर्शनार्थ प्रतीक्षा करनेवाले भक्तों को मुफ्त में दूध और प्रसाद का वितरण किया जा रहा है।

ईश्वर का पता कहाँ?

- श्री वेमुनूरि राजमौलि

कस्तूरी कुंडल बसे मृग, ढूँढत बन माहिं।
ज्यों घट घट में राम हैं, दुनिया देखत नाहिं।।

कस्तूर (एक प्रकार का मृग) अपनी नाभि से निकलने वाली कस्तूरी की सुगन्ध को न पहचान कर, वह सुगन्ध कहाँ से आ रही है, जानना चाहकर पूरा जंगल ढूँढता-फिरता है। उसी तरह मानव भी अपने में विद्यमान परमात्मा को न पहचान कर यहाँ-वहाँ; सर्वत्र ढूँढता रहता है। सर्वत्र व्याप्त दिव्यत्व भावना के बारे में महात्मा कबीर ने उक्त दोहा लिखा।

कस्तूर मृग की भाँति अनेकों लोग ईश्वर को ढूँढते, जहाँ चाहे वहाँ; सभी जगह जाकर पूजाएँ-अर्चनाएँ संपन्न किया करते हैं। इससे फल प्राप्त न होने पर अन्यत्र जाकर पूजा-अर्चना आदि किया करते हैं। वहाँ भी तुष्टि न पाकर अन्य प्रदेश में ढूँढते हैं। किन्तु अपने में विद्यमान उस आत्म-प्रकाश को नहीं पहचानते। ईश्वर सर्वत्र; सभी में व्याप्त (विद्यमान) हैं। अतः ''मैं और वह अलग-अलग हैं'' - का भेदभाव छोड़कर प्रत्येक जीव; प्रत्येक मानव का आदर प्रीतिपूर्वक करना चाहिए। प्रत्येक प्राणी के प्रति प्रेम-भावना रखनी चाहिए। सभी में प्रकाशित होने वाले दिव्यत्व को पहचानना चाहिए। बुजुर्ग लोग कहते हैं कि विश्वास को बनाये रखने पर ही गम्य स्थान तक पहुँच सकते हैं।''

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण परमात्मा ने कहा ''विश्वास के साथ जो जिस रूप में मेरी आराधना करता है, उसे उसी रूप में दर्शन देता हूँ।'' कइयों महानुभाव कइयों विधानों का आचरण करके अपने अन्तरंग में परमात्मा का दर्शन करके तर गये। अपनी शरण में आनेवाले कबूतर में ईश्वर का दर्शन करने वाले सम्राट शिबि ने उसे श्येन (पक्षियों का शिकार करने वाला एक जाति का पक्षी) के चंगुल से बचाने अपने प्राणों की बाजी लगाकर अपने उरु से माँस काटकर देने को तैयार हुआ। ''नाद ही मेरा वेद है'' - कहकर अपने को नारायण के लिए अंकित करने वाला नाद-ब्रह्म त्यागय्या है। ''विनरो भाग्यमु विष्णु कथा''- (भाग्यवान बनने विष्णु-कथा सुनो) कहकर श्री वेंकटेश्वर का कीर्तन करने वाले वाग्गेयकार अन्नमय्या ने दैव को अपने पास ही बिठा लिया। आध्यात्मिक-साधना से अपने अन्तरंग में ईश्वर का दर्शन करनेवाले श्री रामकृष्ण परमहंस ने, नरेन्द्र को प्रेरित कर के अपने मार्ग पर चलाकर विवेकानन्द के रूप में सुधारना ही नहीं, बल्कि एक युगकर्ता के रूप में संसार को परिचय कराया। परम भागवतोत्तम बम्मेरा पोतना ने जिस भागवत का आन्ध्रीकरण किया। उसमें का प्रत्येक पद्य एक अमृत बिन्दु है। ''इंदुगलडंदु लेडनि संदेहमु वलदु चक्रि सर्वोपगतुंडेंदेंदु वेदकि जूचिन अंदंदे गलडु दानवाग्रनिविंटे'' (हे दानवाग्र! सुनो! इसमें है, उसमें नहीं है का संदेह करना नहीं चाहिए; चक्री, चक्रधारी भगवान सर्वत्र व्याप्त है; जहाँ भी देखो, वहाँ विद्यमान है)- जैसे आणिमुत्य उसमें भरे हुए हैं।

बालक प्रह्लाद का अपने पिता हिरण्यकशिप को सर्वान्तर्यामी के रूप में ईश्वर को दर्शा ने की घटना तथा स्तंभ को चीरकर श्री नरसिंह स्वामी के निकल आने की घटना ने नास्तिकों को भी आस्तिकों में परिवर्तित करके उनमें ईश्वरानुभूति पैदा की; ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। इन सब का सारंश एक ही है। सर्वत्र, सब में व्याप्त भगवान को कहीं किसी जगह ढूँढने की जरूरत नहीं है। ध्यान लगाकर देखें तो, हमारे हृदय में विद्यमान हो दिखते हैं।

तेलुगु मूल - श्री परिकिपंड्ला सारंगपाणि।
साभार - आन्ध्र ज्योति (दैनिक)।

जून महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेषराशि - कारोबार, नौकरी क्षेत्रों में चिन्ता की स्थिति बनी रहेगी। सूक्ष्म बूक्ष से अपने अधिकारों का प्रयोग करें। धर्म कार्यों में रुचि बढ़ेगी। तीर्थाटन का योग बन रहा है। यत्र तत्र भ्रमण करने से हानि हो सकती है।

वृषभराशि - यात्रा का योग कम है। कारोबारी क्षेत्रों में सामान्य लाभ होगी। शत्रुओं में वृद्धि होगी। शत्रु प्रबल है अतः देखकर मैत्री करें। पारिवारिक कष्ट उत्पन्न होंगे। इसलिए अपने जीवन साथी के ऊपर विशेष ध्यान दे अनावश्यक मनमुटाव न करें।

मिथुनराशि - भूमि-भवन कारोबारी क्षेत्रों से लाभ। यात्रा का योग सामान्य है। अपने आय पर ध्यान रखें। अधिक खर्च न करे धन व्यय होगा है। खरीद बेच से सावधान रहे। मासान्त कष्टदायक है।

कर्कराशि - इस महीने यात्रा का योग कम है। कार्यक्षेत्रों में सामान्य लाभ। भूमि-वाहन लाभ होगा। यात्रा, पर्यटन, मूर्ति प्रतिष्ठा, विद्यालयारम्भ में रुचि बनी रहेगी। नवीन कार्यारम्भ होंगे। नित्य हनुमान चालिसा का पाठ करें श्रेयस्कर सिद्ध होगा।

सिंहराशि - इस मास में आप ऊर्जा से परिपूर्ण रहेंगे। यात्रा का योग बन रहा है। यात्रा, पर्यटन, मूर्ति प्रतिष्ठा, विद्यालयारम्भ में रुचि बनी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें शारीरिक कष्ट रोग हो सकता है। विद्यार्थियों के लिए यह महीने अच्छा रहेगा पूर्ण परिश्रम करें। व्यापार तथा कृषी क्षेत्रों में लाभ।

कन्याराशि - आर्थिक कार्यों में असफलता। व्यापारियों के कारोबार में मंदी बना रहेगा। आलस्य आपको सताता रहेगा इसलिए अपने को तैयार रखे। पारिवारिक स्थिति सामान्य रहेगी। दाम्पत्य सुखों में कमी हो सकता है। भगवान शिव की आराधना से आरोग्यता प्राप्त होगी।

तुलाराशि - धार्मिक कार्य में रुचि बढ़ेगी। कारोबार सामान्य चलेगा। उच्चस्थान एवं स्थान परिवर्तन का योग। अनावश्यक यात्रा से धन व्यय। उच्चपदाधिकारि से वैमनस्ता असंतोष जिससे मनमुटाव की सम्भावना बनी रहेगी। कामों में अड़चने आ सकती है।

वृश्चिकराशि - संभलकर चले वाद-विवाद होने कि संभावना है। अपने अहं और गुस्से को काबू में रखें। लोगों एवं स्थितियों से सही ढंग से निपटेंगी। अकारण लोगों से झगड़ा झंझट न करे भुगतना पर सकता है। स्थानान्तरण के योग हैं। हनुमानजी की आराधना करें।

धनुराशि - किए-गए प्रयास और लम्बे समय से रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। समाज में मान-सम्मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मित्रों से अच्छे सम्बन्ध बनाकर रखें। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दौड़-धूप का योग बन रहा है।

मकरराशि - सरकारी कार्यों में सफलता मिलेगी। राजकीय शासकीय लोगों से मेल मिलाप रखें लाभदायक हो सकता है। मित्रों का सहयोग बना रहेगा। कोर्ट-कचहरी के चक्कर में न रहे भुगतना पर सकता है। भूमि-वाहन लाभ योग है। लाभ से अधिक हानि होगी। हनुमान चालीसा और सुन्दरकाण्ड का पाठ करें।

कुम्भराशि - पारिवारिक स्थिति सामान्य रहेगा। पत्नी का स्वास्थ्य बाधायुक्त रहेगा। यात्रा के योग बन रहे हैं। नित्य कार्य क्षेत्र से धनहानि। ऋण पीड़ा आपको सता सकता है। विद्यार्थियों के लिए अध्ययन की दृष्टि से लाभकारी रहेगा। गणपति की आराधना करें मंगलमय होगा।

मीनराशि - जीवन में उतार-चढाव बना रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें हो सकती है। किसी भी कार्य को करने का मन न करेगा इसलिए अपने ऊपर ध्यान रखे। व्यर्थ का धन व्यय होगा। यात्रा का योग है। यात्राओं से धन हानि होगी।

भारतीय सनातन संस्कृति

- श्रीमती वी.केदारम्मा

जीवन चार दिनों का खेल है। कुछ अनुभवी लोग कहते हैं कि किसी तरह जीवन बिता कर चल बसना ही है। गहराई में बैठकर सोचने पर मालूम होता है कि उनकी बात ठीक ही है। यह विशाल विश्व ही एक नाटक-शाला है। इसमें नचानेवाला सूत्रधार भगवान है। वह रंगस्थल पर आकर नहीं दिखता। परदे के पीछे से नाटक चलाता है। सारे जीव पात्रधारी हैं। पात्र ही आकर चले जाते हैं। सूत्रधार के इशारे पर नाचकर, कहे जानेवाले वचन कहकर, नाचकूद करके, कालरूपी परदा गिरते ही नेपथ्य में चले जाते हैं। पूरा नाटक सूत्रधार के संकल्प और कथा कल्पना के अनुरूप, उसके दशकत्व में चलता रहता है। किंतु किसी तरह बिताकर चल बसने का नहीं है। मौन-जीवियों की बात अलग है; हमारी अलग है। सब कुछ भगवदिच्छा मानकर अच्छा जीवन जीना होगा। जहाँ तक संभव है, यथाशक्ति सूत्रधार के आदेशानुसार सूचनाओं का पालन करना पड़ता है। आदर्शनीय अभिनय करना होगा। तभी नाटक रंजक बनता है; नाटक सफल बनता है; पात्रधारों को कीर्ति प्राप्त होती है। इहलोक-जीवन सार्थक बनता है। मुमुक्ष की काँक्षा सुगम बनती है। भारतीय संस्कृति के वेदान्त-दर्शन का वचन भी यही है।

संसार भर की प्राणिकोटि में से एक मानव ने ही विशिष्टता को प्राप्त किया है। वह सहज ज्ञानी है; बुद्धि जीवी है। इतर जीवों की अपेक्षा भाषा-संपत्ति, भाव-व्यक्तीकरण की शक्ति मानव में ही है। यह उसकी विशिष्ट प्रतिपत्ति (ज्ञान) है। मानव सोच सकता है; भावना कर सकता है; बातचीत कर सकता है; काम कर सकता है; अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। यह भाग्य दूसरे जीवों, जन्तुओं में नहीं है। इसीलिए मानव मात्र ही ईश्वर-संकल्प का निर्वहण कर सकता है। आत्मोद्धरण के साथ-साथ समाज का सुधार कर सकता है। ईश्वर पर श्रद्धा व भक्ति रख कर, अपनी सूझबूझ से सत्कार्य करके सारी जनता का मान्य बनकर इहलोक व परलोक में समुन्नत स्थान प्राप्त करता है। इसीलिए विज्ञ लोग कहते हैं कि मानव का जन्म उत्कृष्ट जन्म है; सुदुर्लभ है; अनेकों जन्मों का सुकृत फल है। शास्त्रों ने भी घोषित किया-''जंतूनाम नरजन्म दुर्लभम्।''

प्रधान रूप से भारत वेद भूमि है; आध्यात्मिक भूमि है; धर्म भूमि है; कर्म भूमि है। भारतीय-धर्म; जीवन-विधान का मूल स्त्रोत वेद-विज्ञान ही है। ''वेदोऽखिलो धर्ममूलं'' - पर भारत-वासियों का अचंचल विश्वास है। हमारा प्रगाढ़ विश्वास है कि ''मानवों ने वेदों की रचना नहीं की; वे, अपौरुषेय हैं; भगवद्वाक्य हैं; जाति की प्रदीपिकाएँ हैं।''

भारतीय-संस्कृति में हेरफेर होने पर भी साधारण जनता में वेद-धर्म के प्रति आक्षेप पैदा नहीं हुआ। ऐसा हमको ज्ञात होता है। नवीन विज्ञान के अनुगुण्य, आधुनिक जीवन बिताते, सनातन संप्रदाय, आचार व्यवहारों का समन्वय करके, सामरस्यता के साथ लोग जीवन बिता रहे हैं।

भारतीय संस्कृति में पुरुषार्थ-साधन की अत्यन्त प्राधान्यता है। वे चार हैं; धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। हमारे सभी कार्यों का मूल धर्म ही है। धर्म-स्वरूप के निर्णय में फिर से वेद-शास्त्रों का ही प्रमुख स्थान है। ''तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य विचक्षणे'' - यह, आर्ष सम्मत वचन है। हम अपनी बुद्धि व विवेचन के साथ सोचते हैं कि ''कौन-सा काम करना उचित है; कौन-सा काम अनुचित है।'' इस विषय में भी हम वेद-शास्त्रों का ही अनुसरण कर रहे हैं। वेद-विहित-मार्ग ही आचरण योग्य है; ऐसा हमारा मत है। ''धर्मो रक्षति रक्षितः'' की सूक्ति प्रचार में है। याने यदि हम अपने आचरण के द्वारा धर्म की रक्षा करें, तो वह धर्म समस्त श्रेय पहुँचा करके

हमारी रक्षा करता है। वैसे ही धर्म पूर्वक प्राप्त अर्थ (धनार्जन), काम (काम्या, इच्छा) और अन्त में पारलौकिक-सुख कारक मोक्ष की प्राप्ति धर्माचरण के द्वारा ही होती है। असत् से सत् की ओर; अन्धकार से प्रकाश की ओर; मृत्यु से अमृतत्व की ओर चलाने की शक्ति हमारी आर्ष-संस्कृति में ही है। भारतीय-जीवन-विधान के प्राणभूत माने जानेवाले सत्य और धर्म की साधना हमारी सनातन संस्कृति में ही निहित है।

वेद ने प्रवचित किया कि ''शतायुः पुरुषः।'' याने मानव का जीवन-काल सौ साल का है। उसके आयुःप्रमाण के अनुसार आश्रम-व्यवस्था कायम हुई; इससे पुरुषार्थ-साधना के लिए मौका मिला। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास नामक चतुर्विध आश्रमों के अनुगुण्य आश्रम धर्मों का निर्माण हुआ। मानव का जन्म न गिन कर, उसके गुण और कर्तव्य परायणता के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चार वर्णों का निर्माण हुआ। वैदिक-धर्माचरण सभी आश्रमवासियों और सभी वर्णों वाले लोगों के लिए आवश्यक माना गया है। जीवन के तीन भाग व्यतीत होने के पश्चात् वेद ने आदेश दिया कि ''मनोमोक्षे निवेषयेत्।'' इसका अर्थ है- अन्तिम अवस्था में मानव को अपनी दृष्टि मोक्ष की ओर केन्द्रित करके, तत्प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना होगा। ''त्यक्त्वा संगान परिव्रजेत्'' - सारी इच्छाओं को त्याग देना चाहिए; ऐसा वेद ने कहा। सभी वर्णों के लोग जो भी काम करते हैं, वे सभी वर्णों के लोगों के लिए उन-उन वर्णाचरणों के अनुसार नित्य नैमित्तिक कर्म निर्धारित किये गये हैं। षोडश संस्कार, पंच महा यज्ञ, पर्वदिनों के अवसर पर निर्वहण किये जानेवाले व्रत, दान आदि प्रवचित किये गये हैं। भारतीय-जीवन-मार्ग, पवित्र, परिशुद्ध, शास्त्रीय विधान के अनुसार निर्मित है। ''सर्वेजनाः सुखिनोभवन्तु'' - नामक एक सूक्ति है। वह समुन्नत लक्ष्य के साथ चतुर्विध-पुरुषार्थों को सिद्धि के लिए निर्मित सुनहला मार्ग है।

मानव के उत्तम जीवन के लिए व्यक्तिगत शीलसंपदा को प्राधान्यता दी गयी। भूतदया, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, (चोरी नहीं करना), ब्रह्मचर्य, शौच, सहन शीलता, शान्ति, परोपकार, अनसूया, अस्पृह (कामनाओं रहित) इत्यादि सारे अच्छे गुण शील-संपदा से आविर्भूत आत्म-गुण हैं; ऐसा कहा गया है। शीलसंपत्ति चतुर्वर्णों के लिए समान रूप से लागू की गयी है। एकेश्वरोपासना को ही भारतीय-धर्म-शास्त्र ने स्वीकृत किया। सारे धर्मों के सार का परिशीलन करके ''एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति'' का निर्णय किया। गीता में भी श्रीकृष्ण भगवान ने ''ये यथा मां प्रपद्यन्ते तां स्तथैव भजाम्यहं'' - जो जिस देवता के रूप में मेरा भजन करता है, उसे मैं उसके ही रूप में अनुग्रह प्रदान करता हूँ। चराचर, सारा संसार परमात्म-तत्त्व का ही प्रतिबिंब है। ''एकः परमात्मा बहुदेहवर्ति,'' ''सर्वदेव नमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति'' कहकर भारतीय-संस्कृति ने प्रकट किया। मरणानन्तर का जीवन; पुनर्जन्म-सिद्धान्त को भी भारतीय-वेद-धर्म ने अंगीकार किया।

ये सारे वेद-विहित सनातन धर्म, भारतीय संस्कृति के अन्तस्सम्मेलन हैं। यथा प्रकार इसका अनुसरण करना ही भारतीय-जीवन-विधान है। पवित्र जीवन मार्ग ही इह-पर-सुख संधायक है; ऐसा वाल्मीकि आदि महर्षियों ने अपनी रचनाओं द्वारा अमृत संदेश लोक को दिया।

पवित्र जीवन विधान ही भारतीय-संस्कृति की विशिष्टता है; ऐसा एक ही एक वाक्य में बता सकते हैं। इस पवित्र भूमि पर जन्म लेनेवाले सारे लोग अमृत-पुत्र हैं; ऐसा वेद वाणी ने घोषित किया। - ''शं नो अस्तु द्विपदे, शं चतुष्पदे स्वस्तिमानुषेभ्यः'' - दो पाँव वाले जीवों, चार पाँव वाले जन्तुओं; सभी मानवों आदि की भलाई हो; ऐसा वेद-भारती ने आशीर्वाद दिया। आज भी वेद-शासन का ही पालन भारतीय-संस्कृति कर रही है। मूल विधेय के रूप में अग्रसर हो रही है।

स्वस्ति

तेलुगु मूल - श्री आरुट्ल भाष्याचार्यजी।

साभार - श्रीमाता, सनातन पथगामी (मासिक पत्रिका)।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

१. नाम : .....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
.....
पिनकोड .....
मोबाइल नं .....

२. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नडा
☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

३. वार्षिक / जीवन चंदा :

४. चंदा का पुनरुद्धरण :

(अ) चंदा की संख्या :

(आ) भाषा :

५. पेय रकम :

६. पेय रकम का विवरण :

नकद (एम.आर.टि. नं) दिनांक :

धनादेश (कूपन नं) : दिनांक :

मांगड्राफ्ट संख्या : दिनांक :

प्रांत :

दिनांकः चंदा भरनेवाला का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.६०.००, जीवन चंदा : रु.५००-००
- नूतन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र का उपयोग करें।
- इस कूपन को काटकर, पूरे विवरण के साथ इस पते पर भेजें–
- संस्कृत में जीवन चंदा नही है, वार्षिक चंदा रु.६०-०० मात्र है।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, के.टी.रोड,
तिरुपति-५१७ ५०७. (आं.प्र)

नूतन फोन नंबरों की सूचना

चंदादारों और एजेंटों को सूचित किया जाता है कि हमारे कार्यालय का दूरभाष नंबर बदल चुका है और आप नीचे दिये गये नंबरों से संपर्क करें–

कॉल सेंटर नंबर
0877 - 2233333

चंदा भरने की पूछताछ
0877 - 2277777

अर्जित सेवाएँ और आवास के अग्रिम आरक्षण के लिए कृपया इस नंबर से संपर्क करें–

STD Code:
0877

दूरभाष :

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Dr.K.Radha Ramana, M.A., M.Phil, Ph.D.,** Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri R.V.Vijaykumar,** B.A., B.Ed., **Dy.E.O.,** (Publications & Press), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

अप्पलायगुंटा

श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

दि. १३-०६-२०१९ से दि. २१-०६-२०१९ तक

१३-०६-२०१९ गुरुवार
सुबह - ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

१४-०६-२०१९ शुक्रवार
सुबह - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

१५-०६-२०१९ शनिवार
सुबह - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

१६-०६-२०१९ रविवार
सुबह - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

१७-०६-२०१९ सोमवार
सुबह - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

१८-०६-२०१९ मंगलवार
सुबह - हनुमद्वाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

१९-०६-२०१९ बुधवार
सुबह - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

२०-०६-२०१९ गुरुवार
सुबह - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

२१-०६-२०१९ शुक्रवार
सुबह - चक्रस्नान
रात - ध्वजावरोहण

SAPTHAGIRI (HINDI)
ILLUSTRATED MONTHLY
Published by
Tirumala Tirupati Devasthanams 25-05-2019
Regd. with the Registrar of Newspapers
under "RNI" No.10742,
Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment
No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

तिरुचानूर श्री पद्मावती माताजी के प्लवोत्सव
दि. १३-०६-२०१९ से दि. १७-०६-२०१९ तक